चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

आषाढ़-श्रावण, युगाब्द 5126, जुलाई 2024

मर्यादा एवं संयम से कर्त्तव्य पालन ही धर्म संस्कृति की पहचान

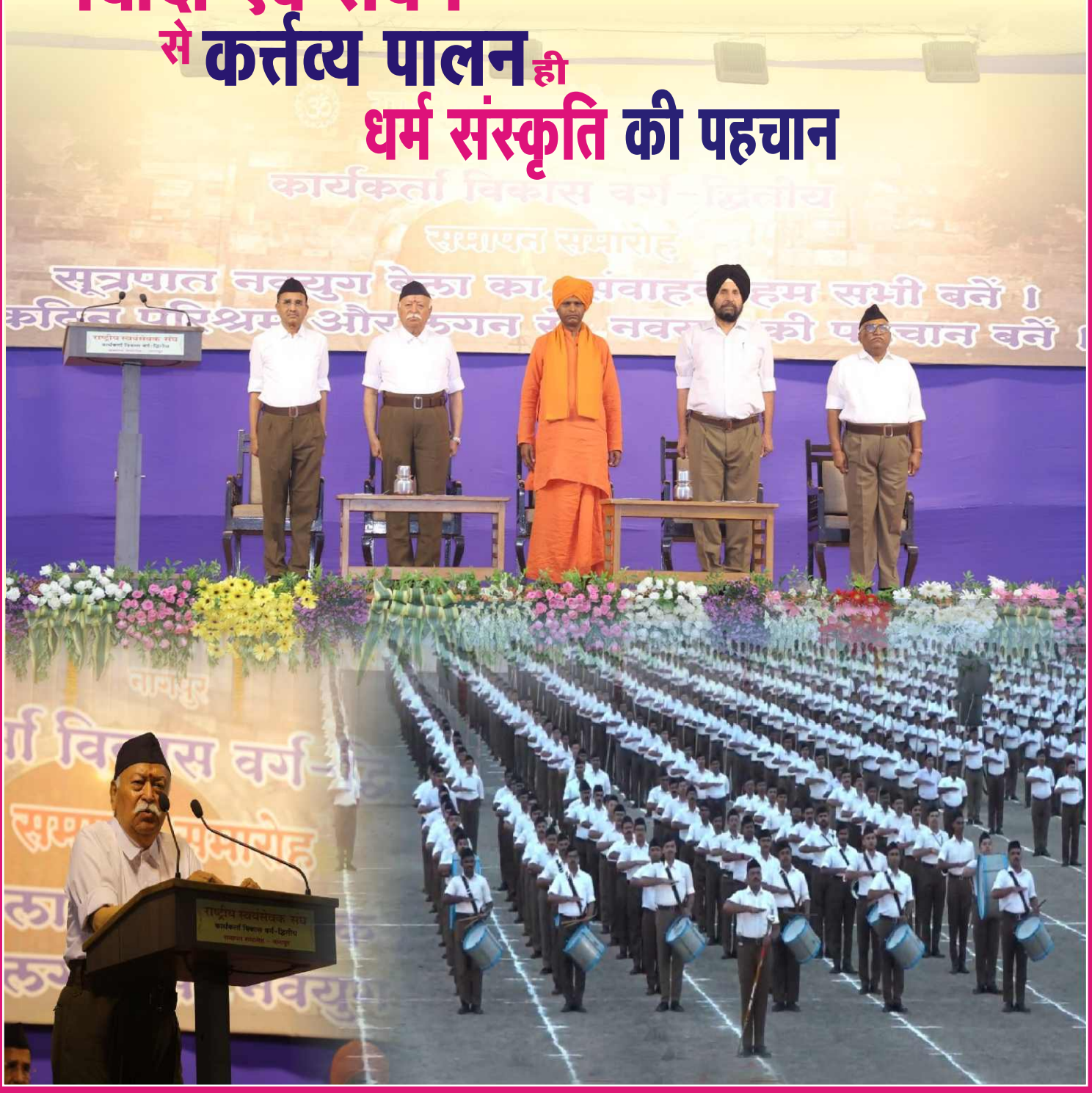

बिना दूसरों को धक्का लगाए, मर्यादा में रहकर कार्य करना ही धर्म एवं संस्कृति है : डॉ. मोहन भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक परमपूज्य डा. मोहन भागवत जी द्वारा नागपुर में संघ के कार्यकर्ता विकास वर्ग-द्वितीय के समापन कार्यक्रम में दिए गए उद्बोधन के मुख्य अंश :

- इस बार भी हमने अपने लोकमत जागरण का काम किया है। वास्तविक सेवक मर्यादा का पालन करते हुए चलता है। अपने कर्तव्य को कुशलता पूर्वक करना आवश्यक है।
- काम सब लोग करते हैं परंतु कार्य करते हुए कौशलपूर्वक, बिना दूसरों को धक्का लगाए, मर्यादा में रहकर कार्य करना ही धर्म एवं संस्कृति है। मैंने यह किया, ऐसा अहंकार नहीं रहना चाहिए।
- इस देश के लोग भाई भाई हैं, इस बात को हमें अपने विचारों और अपने कामों में लाना होगा।
- अगर कोई आपसे सहमत नहीं है, तो उसे विरोधी कहना बंद कीजिए। विरोधी के बजाय प्रतिपक्ष कहिए। एक पक्ष होगा और उसके सामने अपनी बात रखने वाला प्रतिपक्ष होगा। संसद में किसी भी सवाल पर दोनों पहलू सामने आएं, इसके लिए इस तरह की व्यवस्था की गई है।
- लोगों ने अपना जनादेश दे दिया है। हर चीज उसके हिसाब से होनी चाहिए। कैसी होगी? कब होगी? संघ इन सब में नहीं जाता है। क्योंकि समाज परिवर्तन से ही व्यवस्था परिवर्तन होती है।
- किसी भी बड़े बदलाव के लिए आध्यात्मिक चेतना का जागृत होना जरूरी है।
- इस बार भी हमने अपने लोकमत जागरण का काम किया है। वास्तविक सेवक मर्यादा का पालन करते हुए चलता है। अपने कर्तव्य को कुशलतापूर्वक करना आवश्यक है।
- इसे मैंने करके दिखाया... इसका अहंकार हमें नहीं पालना चाहिए। जो ऐसा करता है, वही असली सेवक है। उपलब्धियों का ढिंढोरा पीटने की जरूरत नहीं।
- काम करते सब लोग हैं, लेकिन काम करते समय मर्यादा का पालन करना चाहिए। मर्यादा ही अपना धर्म और संस्कृति है। उस मर्यादा का पालन करके जो चलता है, वो कर्म करता है। लेकिन कर्मों में लिप्त नहीं होता। उसमें अहंकार नहीं आता कि मैंने किया है.. वो ही सेवक कहलाने का अधिकारी रहता है।
- मणिपुर एक साल से शांति की राह देख रहा है। जरूरी है कि इस समस्या को प्राथमिकता से सुलझाया जाए।
- भगवान ने सबको बनाया है...भगवान की बनाई कायनात के प्रति अपना भावना क्या होनी चाहिए। ये सोचने का विषय है। सोच समझकर जो समय के प्रवाह में विकृति आई हैं, उसे हटाकर ये जानकर कि मत अलग हो सकता है, तरीके अलग हो सकते हैं, सब अलग हो सकता है, लेकिन हमें इस देश को अपना मानकर उसके साथ भक्तिपूर्ण संबंध स्थापित करना चाहिए। इस देश के लोग भाई-भाई हैं। हमें इस बात को अपने विचारों और कामों में लाना होगा।
- इसके लिए हमें आदत की जरूरत होगी। क्योंकि विचार तो होते हैं और वो मन को भी अच्छे लगते हैं. बुद्धि भी उनको मान्य करती है, लेकिन दशकों की आदत को सुधारने में समय लगता है। इसलिए उसके लिए रोज व्यायाम करने की जरूरत है। ये सारी बातें ही संघ की शाखा में होती हैं।
- संघ की शाखा में आने वाला व्यक्ति ऐसा हंसते- खेलते करता है। उसे ध्यान ही नहीं रहता कि जो वो कर रहा है, उससे क्या फायदा हो रहा है। 10-12 साल के बाद जब वह पीछे मुड़कर देखता है, तो खुद को परिपक्व और बदला हुआ पाता है। संघ ये ही काम करता है। संघ इसके लिए ही हैं। ऐसा करते हुए हमें विश्व के सारे जीवन का आधार बनने वाले भारत को फिर से उस रूप में खड़ा करना, जैसा वह पहले था। यह हमारा कर्तव्य है। यही हमारी तपस्या भी है।
- चुनाव में एक दूसरे को लताड़ना, टेक्नोलॉजी का गलत इस्तेमाल और झूठ प्रसारित करना सही बात नहीं है. ये अनुचित आचरण है। क्योंकि चुनाव सहमति बनाने की प्रक्रिया है।
- हजारों वर्षों से जो पाप हमने किया, उसका प्रायश्चित करना होगा। भारतोद्भव जो लोग हैं, उनसे मिलना आसान है क्योंकि इसकी एक ही बुनियाद है। वही यम नियमात्मक आचरण का पुरस्कार सर्वत्र है। पैगंबर साहब का इस्लाम क्या है, सोचना पड़ेगा। ईसा मसीह की ईसाइयत क्या है सोचना पड़ेगा। भगवान ने सबको बनाया है। भगवान की बनाई जो कायनात है, उसके प्रति अपनी भावना क्या होनी चाहिए सोचना पड़ेगा।
- समाज में एकता चाहिए, लेकिन अन्याय होता रहा है। इसलिए आपस में दूरी है। मन में अविश्वास है, हजारों वर्षों का काम होने के कारण चिढ़ भी है। हम सब एक हैं। सबके मत सही हैं। सब समान है, तो फिर अपने मत पर ही रहना ठीक है। दूसरों के मत का भी उतना ही सम्मान करना चाहिए।

मातृवन्दना संस्थान का प्रकाशन

मातृवन्दना

वर्ष: 32 अंक : 06 | आषाढ-श्रावण, कलियुगाब्द 5126, जुलाई 2024

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा
98050 36545

सह-सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह, वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल
मीनाक्षी सूद, डॉ. उमेश मौदगिल,
डॉ. जय कर्ण, डॉ. सपना चंदेल,
हितेन्द्र शर्मा

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

पत्रिका प्रमुख / सह प्रमुख
डॉ. राजेश शर्मा / डॉ. मंगतराम

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र., दूरभाष : 0177-2836990
E-mail: matrivandanashimla@gmail.com
Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक : कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेज-9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित। **संपादक : डॉ. दयानंद शर्मा**

मासिक शुल्क	₹25
वार्षिक शुल्क	₹150
आजीवन शुल्क	₹1500

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका मे छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

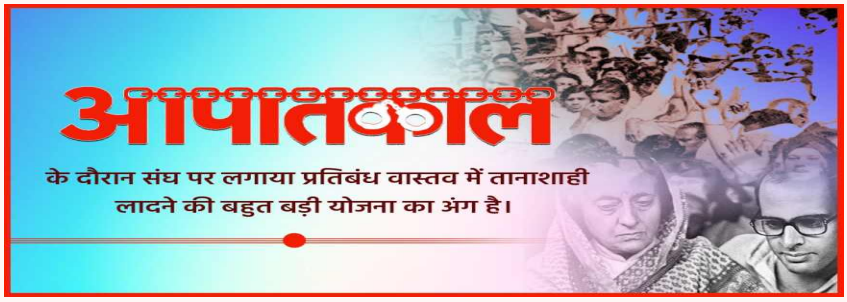

संपादकीय	सच्ची लोक सेवा ही धर्म संस्कृति	5
चिंतन	सच्ची श्रद्धा है प्रसन्नता...	6
प्रेरक प्रसंग	क्लेक्टर मैडम, आप मेकअप...	7
आवरण	संघ शिक्षा वर्ग का समापन..	8
आवरण	राष्ट्रहित में हिन्दुओं को...	9
महिला जगत्	ग्रामीण महिलाओं के लिए आदर्श...	13
संगठनम्	समाज में ऊंच-नीच...	14
देश प्रदेश	हिमाचल में एक और उपचुनाव...	16
स्वजागरण	श्रावण पूर्णिमा कर्म शुद्धि...	17
देवभूमि	यहां की थी भीम ने हिडिंबा...	18
लोक संस्कृति	माधवी लता का विवाह...	20
विविध	प्राचीन भारतीय शिक्षा...	21
कृषि	औषधीय वृक्ष जामुन...	23
काव्य जगत्	आग्नेय गीत...	24
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य रक्षक तुलसी...	25
पर्यावरण	जलवायु परिवर्तन हिमाचल में...	26
पुण्य स्मरण	निरन्तर राष्ट्र सेवा में तल्लीन...	27
योग	हिमाचल में हजारों लोगों...	28
समसामयिकी	हिमाचल में नशे का जाल...	29
घूमती कलम	दलाई लामा बोले चीन में..	30
नवाचार	कोदरे के लड्डुओं के बाद अब...	31
आपातकाल	50 साल बाद भी हरे हैं इमरजेंसी	32
प्रतिक्रिया	पूंजीवाद के विरोध में डॉ. हेडगेवार	33
युवा पथ	हिमाचल की बेटी राधिका को...	34
बाल जगत	संचितो अपि विनश्यति	35

पाठकीय...

महोदय,

'मातृवंदना' पत्रिका का अंक, जो हिंदवी स्वराज के महानायक छत्रपति शिवाजी महाराज को समर्पित था, पढ़ने को मिला। इस अंक ने इतिहास और संस्कृति के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर किया। इसके साथ ही, पुस्तक मेले में 'राम जन्मभूमि' पर आधारित अंक भी मातृवंदना के स्टाल पर उपलब्ध था। इन अंकों में उत्कृष्ट सामग्री और महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गई थी, जिससे पाठकों को बहुत लाभ हुआ।

इस पत्रिका के साथ रामलला का सुंदर कैलेंडर भी दिया जा रहा था, जो एक सराहनीय पहल है। मातृवंदना पत्रिका को यदि अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाया जा सके, तो यह एक ऐसी पत्रिका है जिसे परिवार के सभी सदस्य मिलकर पढ़ सकते हैं। सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए इसमें कुछ न कुछ जानकारी अवश्य मिलती है।

छोटे बच्चों को इस तरह की पत्रिकाओं को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उनकी रुचि की सामग्री को अधिक से अधिक शामिल किया जाना चाहिए। यदि संभव हो, तो बच्चों की रचनाओं को भी इसमें स्थान दिया जाना चाहिए। इससे बच्चों को उत्साह मिलेगा और लिखने-पढ़ने की आदत भी विकसित होगी। उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहन मिलेगा, जिससे वे अपनी लेखन और अध्ययन की क्षमताओं में सुधार कर सकेंगे।

मातृवंदना जैसी पत्रिकाएं केवल जानकारी प्रदान करने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि यह परिवारिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी संजोने और संवारने का कार्य करती हैं। इस प्रकार की पत्रिकाएं समाज में ज्ञानवर्धक और संस्कारवान पीढ़ी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

- शकुन्तला नवांशहर, पंजाब

महोदय,

पत्रिका, संस्थान के माध्यम से हिन्दुओं की वैचारिकता को लोगों तक पहुंचाने का एक मुख्य साधन है। इसलिए इसमें इस तरह की स्तरीय सामग्री भी जुटाई जाती है, जो वर्तमान में विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श के लिए जरूरी है। धर्म और संस्कृति की आड़ में सभी अपने-अपने मत को एक दूसरे पर थोप देना चाहते हैं जिससे धर्म और संप्रदाय में अंतर होना कठिन हो जाता है। मातृ वंदना के माध्यम से हिंदू धर्म एवं संस्कृति की व्यापकता को जिस प्रामाणिकता के साथ पेश किया जा रहा है, वह तारीफ करने के काबिल है। जिन विषयों पर समाज बंटता जा रहा है, लोग आपस में उलझे हुए हैं, उन विषयों पर भी सीधी और स्पष्ट सूचना इस पत्रिका के माध्यम से सामने आती है जो कई तरह की शंकाओं को मिटाने में समर्थ है। इस दृष्टि से यह जरूरी है कि इस पत्रिका को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की कोशिश की जाए ताकि राष्ट्र के प्रति लोगों के मन में सम्मान और सेवा की भावना मजबूत हो सके। हिमाचल प्रदेश की भी पारंपरिक लोक संस्कृति को ठीक से जाना जा सके। क्योंकि वर्तमान में भी कुछ कुरीतियां समाज में पनपती जा रही हैं, सहनशीलता का भाव कम हो रहा है। एक दूसरों को सुनने और समझने की बजाय सब अपनी बातों को औरों पर लादने की कोशिश करते हैं जिससे मानवता और बिखराव की स्थिति समाज में देखने को मिलती है। इसलिए विश्व स्तर पर जिन मान्यताओं को मानव कल्याण के लिए सभी की सहमति से स्वीकार किया गया है इस ओर आगे बढ़ाना चाहिए ताकि सभी के कल्याण की बात की जा सके।

- वंदना कुमारी मशोबरा, शिमला

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 **7650000990**

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को गुरू पूर्णिमा एवं कारगिल विजय दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस जुलाई 2024

पुरी रथ यात्रा	7 जुलाई
विश्व जनसंख्या दिवस	11 जुलाई
वामन पूजन	18 जुलाई
वरकेश्वर दत्त समृति दिवस	20 जुलाई
गुरू पूर्णिमा	21 जुलाई
बाल गंगाधर तिलक जयंती	23 जुलाई
कारगिल विजय दिवस	26 जुलाई
सरदार उधम सिंह बलिदान दिवस	30 जुलाई

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

संपादकीय

सच्ची लोक सेवा ही धर्म संस्कृति का पर्याय

हम उस देश के वासी हैं जिसे विश्व गुरू की संज्ञा प्राप्त थी। अपने देश की प्राचीनता, इसके गौरवपूर्ण इतिहास, संस्कृति और सनातन धर्म की हम हमेशा बात करते रहते हैं और इस बात का हमें गर्व भी है किंतु जब हम राजनीति की बिसात पर खेलना शुरू करते हैं तो न जाने हमारा हृदय परिवर्तन कैसे और क्यों कट हो जाता है। दलगत राजनीति में बंधे हुए हम विभिन्न राजनीतिक दलों की तथाकथित छद्म धर्मनिरपेक्ष, वामपंथी अथवा समाजवादी विचारधाराओं का प्रश्रय लेते हुए यह विस्मृत कर जाते हैं कि राष्ट्र सर्वोपरि है। उसके प्रति निष्ठ होना और ऐक्य भाव रखना जरूरी है। वैचारिक विरोध तक सीमित न रहकर आक्षेप एवं विद्रोह से भरपूर तथा धार्मिक भावनाओं तक ठेस पहुंचाने की निम्न स्तर की राजनीति ने भारतीय समाज को विकृत स्थिति में पहुंचा दिया है।

हमारा धर्म, हमारी संस्कृति हमें मर्यादित जीवन का पाठ पढ़ाती आई है। अपनी मर्यादा में रहते हुए कुशलतापूर्वक अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए बड़ी ईमानदारी से जीवन यापन करना तथा दूसरों का अनहित ना चाहते हुए समाज एवं राष्ट्रहित में सच्ची सेवा में संलग्न रहना ही हमारा धर्म है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने नागपुर में संघ कार्यकर्ता विकासवर्ग के समापन कार्यक्रम में दिए गए अपने उद्बोधन में इसी आशय को व्यक्त करते हुए कहा कि कुशलतापूर्वक कार्य करते हुए किसी को धक्का दिए बगैर मर्यादा में रहकर आगे बढना ही धर्म एवं संस्कृति है। उनका कहना था कि जनमत का सम्मान होना चाहिए। भारत में जन्मे सब भाई-भाई हैं, इसी विचार से काम होना चाहिए। सबका अपना-अपना मत हो सकता है, किंतु किसी बड़े बदलाव के लिए आध्यात्मिक चेतना का जागृत होना अत्यंत आवश्यक है। आज सत्ता के शीर्षासन पर विराजमान होने के लिए सभी राजनीतिक दल येन-केन प्रकारेण प्रयासरत दिखाई देते हैं। वैचारिक मतभेद होते हुए भी सत्तामोह में डूबे हुए कई छोटे-बड़े राजनीतिक दल चुनाव पूर्व गठबंधन बनाने में कतराते नहीं। बहुमत हासिल करना ही उनका मुख्य उद्देश्य होता है। किन्तु सत्ता मिलते ही उनके निजी स्वार्थ उभर कर सामने आ जाते हैं और राष्ट्रहित एवं समाज सेवा पीछे छूट जाते हैं, विगत इतिहास इस बात की पुष्टि करता है। वर्तमान में लोकसभा के चुनाव में भी कांग्रेस, वामपंथी दल, समाजवादी दल, तृणमुल कांग्रेस, आप, डीएमके जैसे बड़े दलों तथा अन्य क्षेत्रीय दलों का एक विशाल गठबंधन उभर कर सामने आया। इनमें कोई वैचारिक समानता न होने पर भी एक समानता अवश्य दृष्टिगत हुई कि इन्होंने अल्पसंख्यकों विशेष रूप से मुसलमानों, पिछड़े एवं दलित वर्ग को पूर्णतया अपनी ओर आकृष्ट करने का भरपूर प्रयास किया। इन वर्गों से जुड़े मतदाताओं के मन में यह बात भर दी कि यदि भाजपा की सरकार पुन: आई तो आरक्षण समाप्त किया जायेगा। संविधान में फेरबदल होगा। संविधान बचाने, बेरोजगारी एवं गरीबी हटाने तथा सत्ता प्राप्ति पर महिला, युवा तथा कृषक वर्ग की लाखों रुपए से मुफ्त में खटाखट जेबें भरने का गठबंधन ने आश्वासन दिया। आम जनता इतनी भोली है कि वह बार-बार ठगे जाने पर भी राजनेताओं के झांसे में आ जाती है। उसी का परिणाम था कि कई बड़े राज्यों में उसे आशातीत सफलता भी प्राप्त हुई, परंतु सत्ता के सन्निकट पहुंचने में फिर भी असमर्थ रही। दूसरी ओर सत्ताधारी भाजपा ने भी कई क्षेत्रीय दलों के साथ चुनाव पूर्व गठबंधन किया था। पूर्व के कार्यकाल में भी राजग का गठबंधन था और उसने सत्ता में रहते हुए 'सबका साथ-सबका विकास' के लक्ष्य के साथ गठबंधन धर्म का निर्वहन किया। यही कारण रहा कि दो कार्यकाल पूर्ण करने के पश्चात उसने तीसरी बार भी बहुमत हासिल कर सरकार बनाई और जनता का विश्वास प्राप्त किया जबकि प्रतिपक्षी गठबंधन का सहयोग देने के लिए विदेशी फंडिंग में कोई कमी नहीं रही। विदेशी मीडिया ने भी नकारात्मक भूमिका निभाने की पुरजोर कोशिश की।

वास्तव में पश्चिमी देश और विश्व की बड़ी आर्थिक शक्तियां नहीं चाहती थी कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत जिस प्रकार तीव्र गति से आर्थिक एवं सैन्य शक्ति के रूप में आगे बढ़ रहा है, वह आगे बढ़े। सत्ता प्राप्ति के बाद नई गठित सरकार और उसके शीर्ष नेतृत्व को आने वाले पांच वर्षों में विकसित भारत का संकल्प लेकर और उस हेतु कर्मठता से कार्य करते हुए सफलता प्राप्त कर उन विदेशी शक्तियों को जवाब देना होगा और भारतीय जनमानस में अपने कल्याणकारी कार्यों से विश्वास उत्पन्न करना होगा।

सच्ची श्रद्धा है प्रसन्नता का आधार

मनोकामनाएं पूरी होने से प्रसन्नता होती है या प्रसन्न रहने से मनोकामनाओं की पूर्ति होती है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि वस्तुओं या साधनों की उपलब्धि पर मन की प्रसन्नता निर्भर नहीं है।

बहुमूल्य वस्तुओं के विक्रेता या उत्पादक अपने गोदामों में कितना माल भरे रहते हैं, उन्हें हाथों से इधर-उधर उठाते-धरते हैं, तो भी न संत्तोष होता है, न उपलब्धि। इसके विपरीत जनजातियों की महिलाएं कौडियों, सीपों, घुघनियों के जेवर बनाकर पहनतीं, प्रसन्न होती हैं और अपने आपको सौभाग्यशाली मानती हैं।

बैंक के खजांची के पांस लाखों रुपए के नोट होते हैं। जौहरी का नौकर जेवरों को झाड़-बुहार कर सुसज्जित रूप से रखता है, तो भी उसके मन पर उस संपदा की छाप नहीं होती। इसके विपरीत छोटे बच्चे गुब्बारे, सीटी, झुंनझुने जैसी कम मूल्य की वस्तुओं का उपहार पाकर प्रसन्नता से फूले नहीं समाते और जिस-तिस को अपनी प्रसन्नता भरा सामान दिखाते फिरते हैं। मन जो चाहता है, उसमें कोई स्थिरता नहीं होती। लडक़ा मैट्रिक पास फर्स्ट डिवीजन होना चाहता था, सो हो भी गया। एक दिन खुशी भी छाई रही, पर दूसरे दिन से चिंता आरंभ हो गई कि कालेज की कक्षा में भी प्रथम श्रेणी आनी चाहिए। यह इच्छा उत्कंठा दिन प्रतिदिन तीव्र होती गई, जैसे-जैसे परीक्षा निकट आने लगी, वैसे-वैसे चिंता एवं उत्कंठा भी बढ़ती गई। सफलता में कोई संदेह होने लगा, तो मन में असमंजस और बढ़ता गया। व्यापार में इच्छित लाभ हो गया। इसकी खुशी समाप्त नहीं हो पाई कि अब अगले कदम से लाभ की उत्कंठा बढ़ने लगी और उसका सरंजाम जुटाने की लगन लगी। इस प्रकार जब तक कोई वस्तु उपलब्ध नहीं है, तब तक उसकी उत्सुकता, उत्कंठा और लगन लगी रहती है। मिलने पर जो प्रसन्नता होती है, वह क्षण भर रहती है और अगली उससे भी बड़ी सफलता पाने की योजना बनने लगती है। कोई ऊंचा पद प्राप्त करने के लिए कब से कितने प्रकार के प्रयत्न किए जा रहे थे अब पद मिलते ही, उसके साथ जुड़ी हुई जिम्मेदारियां रहने की फिक्र दिन-रात बनी रहती है। ऐसा न हो कि उत्तरदायित्व ठीक तरह न निभ पाने पर उपहास प्रताडऩा मिले-और अवनति का आदेश मिल जाए।

मनोकामनाओं की पूर्ति से अस्थायी प्रसन्नता मिलती है, लेकिन स्थायी संतोष नहीं। स्थायी प्रसन्नता का आधार अपने गुण, कर्म और स्वभाव को उच्च स्तरीय बनाना है। आदर्शवादी जीवन अपनाकर आत्मगौरव और अंतरात्मा का संतोष प्राप्त किया जा सकता है, जो स्थायी खुशी का स्रोत है।

संतान नहीं हुई, तब तक उत्कंठा रही, हो गई तो उसकी हारी-बीमारी, शिक्षा, सुसंस्कारिता आदि की चिंताएं छाई रहने लगीं। ऐसी दशा में मनोकामना पूर्ति का सुख किसे मिलता है? मिलता है, तो कितनी देर ठहरता है? फिर वह बच्चा बड़ा होने पर अवगुणी निकले तो निंदा का पात्र बनना पड़ता है और हर घड़ी जी जलता रहता है। किसी समय संतान होने की व्यथा अब इस रूप में बदल गई कि वह न होती। बिना संतान के रहते, तो ही अच्छा होता। वस्तुओं के ऊपर टिकी हुईं कामनाएं आदि और अंत में दु:खदायी परिणाम ही साथ लिए फिरती हैं। प्रसन्नता की एक झलक तो बीच में बिजली की तरह कौंधती है और क्षणभर में काले बादलों की घटा में तिरोहित हो जाती हैं।

स्थायी प्रसन्नता का एक ही मजबूत आधार है कि अपने गुण, कर्म, स्वभाव को उच्च स्तरीय बनाया जाए। व्यक्तित्व को उत्कृष्टता में बदल लिया जाए। क्रियाकलाप में आदर्शवादिता का समावेश रखा जाए। आत्मगौरव को बढ़ाने वाली विधि-व्यवस्था को अपनाए रखा जाए। उस दिशा धारा को अपनाया जाए, जिसमें अंतरात्मा का संतोष बना रहे। ऐसी दिशाधारा अपनाना पूर्णतया अपने हाथ की बात है।◆◆◆

कलेक्टर मैडम, आप मेकअप क्यों नहीं करतीं...?

मलप्पुरम की जिला कलेक्टर सुश्री रानी सोयामोई... कॉलेज के छात्रों से बातचीत करती हैं। उन्होंने कलाई घड़ी के अलावा कोई आभूषण नहीं पहना था। सबसे ज्यादा छात्रों को आश्चर्य हुआ कि उन्होंने 'फेस पाउडर' का भी इस्तेमाल नहीं किया। भाषण अंग्रेजी में था। उन्होंने केवल एक या दो मिनट ही बोला, लेकिन उनके शब्द दृढ़ संकल्प से भरे थे। फिर बच्चों ने कलेक्टर से कुछ सवाल पूछे।

प्रश्न : आपका नाम क्या है? मेरा नाम रानी है, सोयामोई मेरा पारिवारिक नाम है। मैं झारखंड की मूल निवासी हूं। ...और कुछ पूछना है? दर्शकों में से एक दुबली-पतली लड़की खड़ी हुई। 'पूछो, बच्चे...'

'मैडम, आप मेकअप क्यों नहीं करतीं?' कलेक्टर का चेहरा अचानक पीला पड़ गया। उनके पतले माथे पर पसीना आ गया। उनके चेहरे की मुस्कान फीकी पड़ गई। दर्शक अचानक चुप हो गए। उन्होंने टेबल पर रखी पानी की बोतल खोली और थोड़ा पानी पिया। फिर उसने धीरे से छात्रा को बैठने का इशारा किया। फिर वह धीरे से बोलने लगी। तुमने एक परेशान करने वाला सवाल पूछा है। यह ऐसा सवाल है जिसका जवाब एक शब्द में नहीं दिया जा सकता। मुझे जवाब में तुम्हें अपनी जीवन कहानी सुनानी है। मुझे बताओ कि क्या तुम मेरी कहानी के लिए अपने कीमती दस मिनट निकालने को तैयार हो?

तैयार... मेरा जन्म झारखंड के एक आदिवासी इलाके में हुआ था। कलेक्टर ने रुककर दर्शकों की ओर देखा। मेरा जन्म कोडरमा जिले के आदिवासी इलाके में एक छोटी सी झोपड़ी में हुआ था, जो 'मीका' खदानों से भरा हुआ था।

मेरे पिता और माता खनिक थे। मेरे दो बड़े भाई और एक छोटी बहन थी। हम एक छोटी सी झोपड़ी में रहते थे जिसमें बारिश होने पर पानी टपकता था। मेरे माता-पिता कम वेतन पर खदानों में काम करते थे क्योंकि उन्हें कोई और काम नहीं मिल पाया था। यह बहुत गंदा काम था। जब मैं चार साल की थी, तब मेरे पिता, माता और दो भाई कई बीमारियों के कारण बिस्तर पर पड़े थे। उस समय उन्हें यह नहीं पता था कि यह बीमारी खदानों में मौजूद घातक 'मीका धूल' को अंदर लेने से होती है। जब मैं पाँच साल की थी, मेरे भाई बीमारी से मर गए। एक छोटी सी आह भरकर कलेक्टर ने बोलना बंद कर दिया और अपने रूमाल से अपनी आँखें पोंछ लीं।

ज़्यादातर दिनों में हमारा भोजन सादा पानी और एक या दो रोटियाँ हुआ करता था। मेरे दोनों भाई गंभीर बीमारी और भूख के कारण इस दुनिया से चले गए। मेरे गाँव में, डॉक्टर तो छोड़िए, स्कूल भी नहीं था। क्या आप ऐसे गाँव की कल्पना कर सकते हैं जहाँ स्कूल, अस्पताल या शौचालय न हो, बिजली न हो?

एक दिन मेरे पिता ने मेरा भूखा, चमड़ी और हड्डियों से लथपथ हाथ पकड़ा और मुझे टिन की चादरों से ढकी एक बड़ी खदान में ले गए। यह एक अभ्रक की खदान थी जिसने समय के साथ बदनामी हासिल कर ली थी।

यह एक पुरानी खदान थी जिसे खोदा गया और खोदा गया, जो अंतहीन रूप से पाताल में फैली हुई थी। मेरा काम नीचे की छोटी-छोटी गुफाओं में रेंगना और अभ्रक अयस्क इकट्ठा करना था। यह केवल दस साल से कम उम्र के बच्चों के लिए ही संभव था। अपने जीवन में पहली बार, मैंने पेट भर रोटियाँ खाईं। लेकिन उस दिन मुझे उल्टी हो गई।

जिस समय मुझे प्रथम श्रेणी में होना चाहिए था, मैं अंधेरे कमरों में अभ्रक इकट्ठा कर रही थी, जहाँ मैं 'जहरीली धूल' में साँस ले रही थी।

कभी-कभार 'भूस्खलन' में दुर्भाग्यपूर्ण बच्चों का मर जाना असामान्य नहीं था। और कभी-कभी कुछ 'घातक बीमारियों' से भी मर जाते थे दिन में आठ घंटे काम करने के बाद, आप कम से कम एक बार के भोजन के लिए कमा पाते थे। मैं भूख और हर दिन जहरीली गैसों के साँस लेने के कारण दुबली और निर्जलित हो गई थी।

एक साल बाद मेरी बहन भी खदान में काम करने लगी। जैसे ही वे (पिता) थोड़े ठीक हुए, ऐसा समय आया कि मेरे पिता, माँ, बहन और मैं एक साथ काम करते थे और हम बिना भूख के रह सकते थे। लेकिन किस्मत ने हमें दूसरे रूप में परेशान करना शुरू कर दिया था। एक दिन जब मैं तेज बुखार के कारण काम पर नहीं जा रही थी, अचानक बारिश हुई। खदान के नीचे काम करने वाले श्रमिकों पर खदान गिरने से सैकड़ों लोग मारे गए। उनमें मेरे पिता, माँ और बहन भी थे।

रानी की दोनों आँखों से आँसू बहने लगे। दर्शकों में हर कोई साँस लेना भी भूल गया। कई लोगों की आँखें आँसुओं से भर गईं। आपको याद रखना होगा कि मैं सिर्फ़ छह साल की थी। आखिरकार मैं सरकारी अगाती मंदिर पहुँची। वहाँ मेरी शिक्षा हुई। मैंने अपने गाँव से ही अपनी पहली अक्षर-पद्धति सीखी थी। आखिरकार यहाँ कलेक्टर आपके सामने हूं। आप सोच रहे होंगे कि इसका और इस बात का क्या संबंध है? कि मैं मेकअप का इस्तेमाल नहीं करती। उसने दर्शकों की तरफ देखते हुए कहा।

अपनी शिक्षा के दौरान ही मुझे एहसास हुआ कि उन दिनों अँधेरे में रेंगते हुए मैंने जो सारा अभ्रक इकट्ठा किया था, उसका इस्तेमाल मेकअप उत्पादों में किया जा रहा था। अभ्रक पहले प्रकार का मोती जैसा सिलिकेट खनिज है। कई बड़ी कॉस्मेटिक कंपनियों द्वारा पेश किए जाने वाले खनिज मेकअप में, आपकी त्वचा के लिए सबसे चमकीला रंग बहुरंगी अभ्रक से आता है, जिसे 20,000 छोटे बच्चे अपनी जान जोखिम में डालकर निकालते हैं। गुलाब की कोमलता उनके जले हुए सपनों, उनके बिखरते जीवन और चट्टानों के बीच कुचले गए उनके मांस और खून के साथ आपके गालों पर फैलती है।

खदानों से बच्चों के हाथों से उठाए गए लाखों डॉलर के अभ्रक का इस्तेमाल हमारी सुंदरता को बढ़ाने के लिए आज भी किया जाता है। अब आप ही बताइए। मैं अपने चेहरे पर मेकअप कैसे लगाऊं? मैं अपने भाइयों की याद में पेट भरकर कैसे खाऊं जो भूख से मर गए? मैं अपनी मां की याद में महंगे रेशमी कपड़े कैसे पहनूं जिन्होंने फटे कपड़ों में रह कर महंगे कपड़ों के बारे में कभी सपने में भी नहीं सोचा था? कॉलेज के सभी विद्यार्थीगण स्तब्ध थे कलेक्टर की बात सुनकर। जब रानी चली गईं तो पूरा दर्शक अनजाने में ही खड़ा हो गया, उनके होठों पर हल्की मुस्कान थी, आँखों में आँसू पोंछे बिना, उनका सिर ऊँचा था। कई साल बाद... वह महिला कलेक्टर, भारत गणराज्य की पहली नागरिक बनीं महामहिम द्रौपदी मुर्मू भारत गणराज्य की राष्ट्रपति!◆◆◆

सामाजिक परिवर्तन से ही व्यवस्था परिवर्तन सम्भव

- डॉ. मोहन भागवत जी

सामाजिक परिवर्तन से ही व्यवस्था में परिवर्तन होता है. इसके लिए सबसे पहले आध्यात्मिक जागरण की आवश्यकता होती है। आक्रान्ताओं ने जब भारत पर आक्रमण किया तो समाज उनके अत्याचारों से त्रस्त हुआ, तब संतों ने आध्यात्मिक जागरण कर लोक में निर्भयता का भाव जगाया। हमें भी अपने व्यवहार में आत्मीयता और एकात्मता को अंगीकृत करना होगा, तभी समाज में समरसता आएगी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी 'कार्यकर्ता विकास वर्ग द्वितीय' के समापन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर व्यासपीठ पर श्रीक्षेत्र गोदावरी धाम के पीठाधीश महंत श्री रामगिरि जी महाराज, वर्ग के सर्वाधिकारी इकबाल सिंह जी, विदर्भ प्रान्त संघचालक दीपक जी तामशेट्टीवार तथा नागपुर महानगर संघचालक राजेश जी लोया विराजमान थे। सरसंघचालक जी ने कहा कि डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर कहते थे कि कोई भी बड़ा परिवर्तन होने से पहले समाज में आध्यात्मिक जागृति होती है। हमारे देश में यही होता आया है। हमारा समाज विविधताओं से भरा है, किन्तु सबका मूल एक ही है। सभी को एक साथ मिलकर चलना है। हमें दूसरों की राय का सम्मान करना चाहिए. हमें अपनी पूजा पर विश्वास रखकर, दूसरों की उपासना पद्धति का भी सम्मान करना चाहिए. जब हम ये बात भूल गए, तब समाज में विकृति आयी। हमने अपने ही भाई-बहनों को अछूत मानकर अलग रखा. इसे वेदों, उपनिषदों का कोई समर्थन नहीं है।छुआछूत का भेदभाव पुराना हो चुका है। अब समाज को एकात्मता की आवश्यकता है।समाज में अन्याय के कारण एक-दूसरे के प्रति द्वेष और अविश्वास पैदा होता है। उन्होंने कहा कि हमारे ही समाज में जो लोग अन्याय के चलते हमसे अलग हो गए, उन्हें अपने साथ लाना है। सबके प्रति सद्भावना अनिवार्य है।

डॉ. मोहन भागवत जी ने सामाजिक परिवर्तन को व्यवस्था परिवर्तन का आधार बताते हुए आध्यात्मिक जागरण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि समाज में समरसता और एकात्मता लाने के लिए हमें एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता और सम्मान का भाव अपनाना होगा। पर्यावरण संरक्षण और भारतीय दृष्टिकोण से विकास के महत्व पर चर्चा करते हुए उन्होंने शांति, सद्भावना, और सहमति की प्रक्रिया को बढ़ावा देने का आह्वान किया।

पर्यावरण के सम्बन्ध में भारतीय दृष्टि

सरसंघचालक ने कहा कि इस वर्ष पहले से अधिक गर्मी महसूस हुई। हिल स्टेशन पर भी गर्मी का अनुभव हुआ. बेंगलुरू जैसे महानगर में जल संकट हुआ। ग्लेशियर पिघल रहे हैं। पर्यावरण संकट बढ़ रहा है।भारतीय परम्परा स्वयं को पर्यावरण का मित्र मानती है. हमारी मूल दृष्टि वसुधैव कुटुंबकम की है। सृष्टि हमारी माता है। इसी भाव से पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन के प्रतिमान बनाने होंगे। सामाजिक समरसता, पर्यावरण, स्व-आधारित व्यवस्था, परिवार प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य-ये पंच परिवर्तन पर संघ ने कार्य प्रारम्भ किया है।

विकास पथ पर भारतीय दृष्टि

आधुनिक विज्ञान और प्राचीन ज्ञान को एक साथ लाकर काम करना चाहिए। उस उद्देश्य के लिए भारतीय दृष्टि से विकास के मानदंड तैयार करने होंगे। इसके लिए हमें देश में शान्ति चाहिए। कोई देश अशांति से नहीं चल सकता। मणिपुर एक साल से जल रहा है।ऐसा लगा कि पुरानी गन संस्कृति समाप्त हो गई है। किन्तु नफरत का माहौल बनाकर मणिपुर में अशान्ति फैला दी गई। इस पर विचार कर उसका समाधान करना होगा।

चुनाव सहमति बनाने की प्रक्रिया है।संसद में किसी भी प्रश्न के दोनों पहलू पर चर्चा होती है। यह एक व्यवस्था है। वास्तव में सहमति बने इसलिए संसद है. किन्तु चुनाव प्रचार में एक दूसरे को लताड़ना, तकनीक का दुरुपयोग, असत्य प्रसारित करना यह ठीक नहीं है। विरोधी की जगह प्रतिपक्ष कहना चाहिए. चुनाव के आवेश से मुक्त होकर देश के सामने उपस्थित समस्याओं पर विचार करना होगा।◆◆◆

भारत, अपनी विविधता और सांस्कृतिक धरोहर के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ विभिन्न धर्म, संस्कृति, और परंपराओं का संगम देखने को मिलता है। इनमें से हिन्दू धर्म सबसे प्राचीन और व्यापक धर्मों में से एक है, जिसकी जड़ें इस देश की मिट्टी में गहराई से समाई हुई हैं। वर्तमान समय में, राष्ट्रहित में हिन्दू समाज का संगठित होना अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल हिन्दू धर्म के संरक्षण और संवर्धन के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि एक सशक्त और समृद्ध भारत के निर्माण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण

हिन्दू धर्म की विविधता और उसकी समृद्ध परंपराएँ भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं। आज के वैश्वीकरण और आधुनिकता की दौड़ में कई प्राचीन परंपराएँ और सांस्कृतिक मूल्य लुप्त हो रहे हैं। हिन्दू समाज का संगठित होना इस सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शिक्षा और जागरूकता

हिन्दू समाज में शिक्षा और जागरूकता का स्तर बढ़ाने की आवश्यकता है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों का नाश किया जा सकता है। संगठित हिन्दू समाज विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों और जागरूकता अभियानों के माध्यम से समाज में सुधार ला सकता है।

सामाजिक एकता और भाईचारा

हिन्दू समाज का संगठित होना सामाजिक एकता और भाईचारे को बढ़ावा देता है। आपसी सहयोग और समर्थन से ही समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। संगठन से समाज में एकता और समरसता का वातावरण बनता है, जो किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक है।

धार्मिक सहिष्णुता और सम्मान

संगठित हिन्दू समाज न केवल अपने धर्म के प्रति सजग और समर्पित होगा, बल्कि अन्य धर्मों के प्रति भी सहिष्णुता और सम्मान का दृष्टिकोण रखेगा। यह सहिष्णुता और सद्भावना भारत की गंगा-जमुनी तहज़ीब का प्रतीक है, जिसे बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

राष्ट्र निर्माण में योगदान

हिन्दू समाज का संगठित होना राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। सामाजिक सुधार, पर्यावरण संरक्षण, और आर्थिक विकास जैसे क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाकर हिन्दू समाज राष्ट्र की उन्नति में अपना अमूल्य योगदान दे सकता है।

आत्मरक्षा और सुरक्षा

संगठित समाज अपनी सुरक्षा और आत्मरक्षा के प्रति अधिक सजग और सक्षम होता है। वर्तमान समय में, जब विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ और खतरे समाज के सामने हैं, संगठित हिन्दू समाज आत्मरक्षा और सुरक्षा के प्रति अधिक सतर्क और तैयार रहेगा।◆◆◆

राष्ट्रहित में हिन्दू समाज का संगठित होना समय की मांग है। यह संगठन न केवल हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा करेगा, बल्कि एक मजबूत, समृद्ध और एकजुट भारत के निर्माण में भी सहायक होगा। हमें समझना होगा कि संगठन में ही शक्ति है और यह शक्ति ही हमें आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर भविष्य प्रदान कर सकती है। आइए, हम सभी मिलकर इस दिशा में प्रयास करें और एक संगठित, सशक्त और समृद्ध हिन्दू समाज का निर्माण करें, जो राष्ट्रहित में अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके।

हिंदू धर्म पर विपक्ष का नकारात्मक रवैया चिंतन और समाधान

हिंदू धर्म, जो कि दुनिया के सबसे प्राचीन और व्यापक धर्मों में से एक है, सदियों से सहिष्णुता, विविधता और शांति का प्रतीक रहा है। इसके बावजूद, समय-समय पर हिंदू धर्म और उसकी परंपराओं को विपक्षी विचारधाराओं और कुछ राजनीतिक समूहों द्वारा नकारात्मक दृष्टिकोण से देखा गया है। यह नकारात्मक रवैया न केवल हिंदू समाज के लिए अपमानजनक है, बल्कि भारतीय संस्कृति और उसके मूल्यों के लिए भी हानिकारक है। इस लेख में, हम इस नकारात्मक रवैये के कारणों, प्रभावों और संभावित समाधानों पर विचार करेंगे।

नकारात्मक रवैये के कारण

राजनीतिक उद्देश्य

कुछ राजनीतिक दल और विचारधाराएँ हिंदू धर्म और उसकी परंपराओं को राजनीतिक लाभ के लिए निशाना बनाते हैं। धार्मिक भावनाओं का दोहन करके वोट बैंक की राजनीति करना एक आम प्रथा है, जो समाज में विभाजन और तनाव पैदा करती है।

धार्मिक असहिष्णुता

कुछ समूहों द्वारा हिंदू धर्म के प्रति असहिष्णुता का प्रदर्शन किया जाता है। यह असहिष्णुता धार्मिक विविधता और सहिष्णुता के भारतीय सिद्धांतों के खिलाफ है और समाज में सांप्रदायिक तनाव को बढ़ावा देती है।

अल्पज्ञान और भ्रांतियाँ

हिंदू धर्म के बारे में अपर्याप्त ज्ञान और गलत धारणाएँ भी नकारात्मक रवैये का एक बड़ा कारण हैं। बिना सही जानकारी के, लोग हिंदू धर्म की परंपराओं और रीति-रिवाजों को गलत समझते हैं और उन्हें नकारात्मक रूप से प्रस्तुत करते हैं।

नकारात्मक रवैये के प्रभाव

सांप्रदायिक तनाव

धार्मिक समूहों के बीच विभाजन और असहिष्णुता बढ़ती है, जिससे समाज में सांप्रदायिक तनाव और हिंसा का खतरा बढ़ जाता है।

संस्कृति और परंपराओं का ह्रास

हिंदू धर्म और उसकी परंपराओं को निशाना बनाए जाने से उनकी पवित्रता और महत्व कम हो जाता है, जिससे सांस्कृतिक धरोहर को नुकसान पहुँचता है।

सामाजिक अस्थिरता

धार्मिक मुद्दों पर राजनीति करने से समाज में अस्थिरता और अशांति फैलती है, जो देश के विकास और प्रगति में बाधा बनती है।

समाधान

शिक्षा और जागरूकता

हिंदू धर्म के बारे में सही और व्यापक शिक्षा प्रदान करने से भ्रांतियाँ और गलत धारणाएँ दूर हो सकती हैं। शैक्षिक संस्थानों और मीडिया को सही जानकारी का प्रसार करना चाहिए।

संवाद और सहिष्णुता

विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच संवाद और सहिष्णुता को बढ़ावा देना चाहिए। सांप्रदायिक तनाव को कम करने के लिए विभिन्न समुदायों के नेताओं को एक साथ आकर बातचीत करनी चाहिए।

सकारात्मक पहल

हिंदू समाज को अपनी परंपराओं और मूल्यों का सकारात्मक प्रचार-प्रसार करना चाहिए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सेमिनारों, और कार्यशालाओं के माध्यम से हिंदू धर्म की सही छवि प्रस्तुत की जा सकती है।

राजनीतिक सुधार

राजनीतिक दलों को धर्म के आधार पर वोट बैंक की राजनीति से बचना चाहिए। सरकार और न्यायपालिका को धार्मिक असहिष्णुता और सांप्रदायिक हिंसा के मामलों में सख्त कार्रवाई करनी चाहिए।

निष्कर्ष

हिंदू धर्म पर विपक्ष का नकारात्मक रवैया न केवल हिंदू समाज के लिए बल्कि पूरे भारतीय समाज के लिए हानिकारक है। इसे दूर करने के लिए शिक्षा, संवाद, सहिष्णुता और राजनीतिक सुधार की आवश्यकता है। एक संगठित, शिक्षित और जागरूक समाज ही इस नकारात्मकता का मुकाबला कर सकता है और भारतीय संस्कृति और धर्म की सच्ची तस्वीर को दुनिया के सामने प्रस्तुत कर सकता है। हमें मिलकर प्रयास करना होगा कि हम एक समृद्ध, सशक्त और समरस समाज का निर्माण करें, जहां हर धर्म और संस्कृति का सम्मान हो।◆◆◆

गुरु पूर्णिमा, भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है, जो गुरु के प्रति श्रद्धा और सम्मान प्रकट करने का विशेष अवसर प्रदान करता है। यह पर्व आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है और यह दिन महान ऋषि वेदव्यास की जयंती के रूप में भी जाना जाता है, जिन्होंने महाभारत और वेदों का संकलन किया था।

गुरु का महत्व

प्राचीन भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान स्थान दिया गया है, क्योंकि वे सृजनकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता होते हैं। गुरु ही शिष्य को अज्ञानता के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। उनके मार्गदर्शन से शिष्य का संपूर्ण व्यक्तित्व निखरता है और उसे जीवन की सही दिशा मिलती है।

गुरु पूर्णिमा का इतिहास और महत्व

गुरु पूर्णिमा का इतिहास अत्यंत प्राचीन है और इसका उल्लेख वेदों, पुराणों और महाकाव्यों में मिलता है। यह दिन ऋषि वेदव्यास के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है, जिन्हें 'अदि गुरु' माना जाता है। वेदव्यास जी ने महाभारत, 18 पुराण, ब्रह्मसूत्र और वेदों का संपादन किया था। इस दिन का उद्देश्य गुरु के प्रति आभार व्यक्त करना और उनके शिक्षाओं का पालन करने का संकल्प लेना है।

कैसे मनाते हैं गुरु पूर्णिमा?

गुरु पूर्णिमा के दिन शिष्य अपने गुरु के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। वे गुरु को पुष्प, फल, वस्त्र और अन्य उपहार अर्पित करते हैं। इस दिन विशेष पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन और सत्संग का आयोजन किया जाता है। शिष्य अपने गुरु के चरणों में बैठकर उनकी शिक्षाओं को सुनते हैं और उन पर चिंतन करते हैं।

आधुनिक युग में गुरु पूर्णिमा

आज के आधुनिक युग में भी गुरु पूर्णिमा का महत्व कम नहीं हुआ है। भले ही गुरुओं का स्वरूप बदल गया हो, परंतु शिक्षक, मार्गदर्शक और मेंटर के रूप में गुरु की भूमिका अभी भी अहम है। शिक्षा संस्थानों में इस दिन विशेष कार्यक्रमों का आयोजन होता है, जहां छात्र अपने शिक्षकों को सम्मानित करते हैं। शिक्षकों द्वारा भी इस दिन अपने छात्रों को शास्त्र सम्मत नैतिक एवं संस्कारयुक्त शिक्षा का उपदेश देना चाहिए।

गुरु पूर्णिमा हमें यह सिखाती है कि जीवन में ज्ञान और मार्गदर्शन का महत्व कितना बड़ा है। यह दिन हमें हमारे गुरुओं की महत्ता का स्मरण कराता है और उनके प्रति सम्मान और कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर प्रदान करता है। आइए, इस गुरु पूर्णिमा पर हम सभी अपने जीवन के गुरुओं को नमन करें और उनकी शिक्षाओं

का अनुसरण करते हुए अपने जीवन को सार्थक बनाएं। गुरु पूर्णिमा की विशेषता कई आयामों में प्रकट होती है, जो इसे एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण पर्व बनाती है। इस पर्व का महत्व केवल धार्मिक और सांस्कृतिक ही नहीं, बल्कि शैक्षणिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी है। आइए, गुरु पूर्णिमा की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालें :

गुरु के प्रति सम्मान और आभार

गुरु पूर्णिमा का मुख्य उद्देश्य गुरु के प्रति सम्मान और आभार प्रकट करना है। यह दिन शिष्यों को उनके गुरुओं द्वारा दिए गए ज्ञान और मार्गदर्शन के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का सुअवसर प्रदान करता है।

आध्यात्मिक साधना

यह पर्व अध्यात्मिक साधना और आत्म-चिंतन का समय होता है। इस दिन लोग विशेष पूजा, ध्यान और सत्संग का आयोजन करते हैं, जिससे उन्हें आंतरिक शांति व आध्यात्मिक विकास की प्राप्ति होती है।

वेदव्यास जी की जयंती

गुरु पूर्णिमा ऋषि वेदव्यास जी की जयंती के रूप में मनाई जाती है, जिन्होंने वेदों का संकलन और महाभारत की रचना की थी। वेदव्यास जी को आदिगुरु माना जाता है और उनके योगदान के प्रति श्रद्धा प्रकट करने का यह विशेष अवसर है।

शैक्षणिक महत्व

गुरु पूर्णिमा का शैक्षणिक महत्व भी अत्यधिक है। इस दिन स्कूल, कॉलेज और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षकों का सम्मान किया जाता है। छात्र अपने शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं और उनके मार्गदर्शन का पालन करने का संकल्प लेते हैं।

गुरु-शिष्य परंपरा

यह पर्व गुरु-शिष्य परंपरा को पुनर्जीवित करता है और इसकी महत्ता को दर्शाता है। गुरु-शिष्य संबंध भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है और गुरु पूर्णिमा इस परंपरा को मजबूत और सम्मानित करती है।◆◆◆

मुफ्तखोरी के जाल में फंसता भारत

1500 और एक लाख की गारंटी पड़ने लगी भारी

अब भारत की राजनीति में मुफ्तखोरी का रिवाज हर चुनाव में बढ़ता जा रहा है। मुफ्त में कंप्यूटर, राशन, नकद पैसा, साड़ियां, बर्तन, कंबल, लैपटॉप और न जाने क्या-क्या चुनाव में मुफ्त बांटा जाता रहा है। हमारी सरकार आएगी तो और क्या-क्या मुफ्त बांटा जाएगा इसकी बहुत लंबी लिस्ट का चुनाव के दौरान प्रचार किया जाता है। कांग्रेस ने तो चुनाव के दौरान घर-घर जाकर महिलाओं को एक लाख हर साल देने के लिए गारंटी कार्ड जारी कर दिए और फॉर्म भी भरवा लिए। गरीबी, भूख और लालच से मतदाता राजनीति के इस जाल में फंस गया और ज्यादा लालच देने वाली पार्टी के पक्ष में वोट हुआ। कुछ प्रांतों में जनता ने इस लोभ लालच से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में वोट किया। वहां विकास हो रहा है और जहां मुफ्तखोरी की राजनीति हो रही है उन प्रदेशों में आर्थिक संकट पैदा हो गया है। विकास कार्य रुक गए हैं।

पिछले विधानसभा चुनाव में हिमाचल में कांग्रेस ने प्रत्येक महिला को 1500 रूपए देने की घोषणा की। बाद में पैसे की कमी के चलते देना मुश्किल हो गया। फिर आर्थिक आधार पर महिलाओं की छंटनी होने लगी ताकि संख्या कम की जा सके। अगले चुनाव में महिलाओं का दबाव बढ़ता गया और सरकार को 1500 रूपए देने के लिए मजबूर होना पड़ा। अब कुछ महिलाओं को 1500 रूपए देने के लिए फॉर्म भरवाए जा रहे हैं। यह चुनावी स्टंट अब सरकार को भारी पड़ने लगा है। इस तरह की मुफ्तखोरी से प्रदेश के खजाने पर बोझ पड़ेगा और विकास की योजनाएं बंद होने लगेंगी।

लोकसभा के चुनाव में कांग्रेस ने प्रत्येक महिला को एक लाख हर साल खटखट देने का ऐलान कर दिया। अब 100,000 रूपए देने के लिए गारंटी कार्ड और फॉर्म लेकर महिलाएं भारी संख्या में कांग्रेस के कार्यालयों का घेराव करने लगी हैं। अगर भारत की जनसंख्या के आधार पर आधी जनसंख्या भी महिलाओं की है तो 50-60 करोड़ महिलाओं को एक- एक लाख रुपया हर साल देने पर लगभग 60 लाख करोड़ का सालाना खर्च होगा जबकि भारत सरकार का कुल बजट ही लगभग 40 करोड़ का है। ऐसे में यह अनुमान लगाया जा सकता है की चुनाव जीतने के लिए यह शोशा छोड़ा गया है, जो कभी गारंटी के रूप में बदल नहीं सकता है । अगर कांग्रेस अपनी सरकार वाले रा%यों में इसे लागू करती है तो उन प्रदेशों की वित्तीय स्थिति चरमरा जाएगी और सारा बजट महिलाओं को हर वर्ष एक लाख देने में खर्च हो जाएगा। ऐसे में विकास की योजनाओं का क्या होगा ? परंतु राजनीतिक दलों को केवल चुनाव जीतना है। उसके बाद जनता से किए गए वादों को पूरा करने की गारंटी पूरा करना भी कोई जरूरी नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुफ्तखोरी और सब कुछ मुफ्त देने की कवायद भारत की अर्थनीति को नीचे गिरवाने का एक षड्यंत्र भी हो सकता है। भारत को पीछे धकेलने के लिए समाज में फूट डालना, जातिवाद फैलाना, मजहब के नाम पर किसी एक विशेष समुदाय को मुफ्त योजनाएं और सुविधाएं देना, देश आर्थिक नीतियों को कमजोर करना, सेवा का मनोबल गिराना और राजनैतिक अस्थिरता बनाए रखना, यह सोच देश के लिए आत्मघाती साबित होगी। इस बार भाजपा हारने से बच गई। बैसाखियों के सहारे सरकार कितनी चल पाएगी ? तो यह भविष्य बताएगा परंतु जहां विकास के बदले मुफ्तखोरी को मजहब और राजनीति के आधार पर चुनाव जीतना देश के लिए एक खतरे की घंटी है। इस सोच से सामुदायिक विद्वेष बढ़ेगा देश की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साख गिरेगी और विकास की गति कम होगी तथा भारत आर्थिक आधार पर तीसरी शक्ति बनने में पिछड़ जाएगा। इसलिए देश के हित में सरकार बनाने और विकास की गति को तेजी प्रदान करने की जरूरत है।◆◆◆

भारत में चुनावों के दौरान मुफ्तखोरी का चलन बढ़ रहा है, जो प्रदेशों की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर रहा है और विकास कार्यों को बाधित कर रहा है। ऐसे चुनावी वादों से बचकर, राष्ट्रहित में वोट करना आवश्यक है ताकि देश की अर्थव्यवस्था मजबूत बनी रहे और विकास की गति तेज हो सके।

ग्रामीण महिलाओं के लिए आदर्श बनीं कोटगढ़ की कमलेश भैक

बुलंद हौसला, कड़ी मेहनत और संगठित होकर काम करने की ललक हो तो सफलता दूर नहीं, यह सिद्ध किया है, कोटगढ़ की महिला कमलेश भैक ने। महिलाओं का एक संगठन बनाकर स्थानीय फलों सब्जियों, अनाजों का उत्पादन करके उन्हें सुंदर साज-सज्जा के साथ बाजार में बेचकर।

महिला ग्राम संगठन कोटगढ़ में सचिव के पद पर कार्यरत कमलेश भैक ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार के लिए सक्रिय हैं। ग्राम संगठन की स्थापना जुलाई 2022 में की गई। इस समय लगभग 80 महिलाएं इस संगठन के साथ जुड़ी हुई हैं।

इस संस्था की स्थापना का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करना, आजीविका प्रदान करवाना और आत्मनिर्भर बनाना है। संस्था द्वारा महिलाओं के कल्याण के लिए विभिन्न कार्यक्रम व गतिविधियां चलाई जा रही हैं।

महिलाएँ एक साथ मिलकर काम करती हैं। आचार चटनी, जैम, मोड़ी इत्यादि कई तरह के उत्पाद तैयार करके बिक्री के लिए उपलब्ध करवाती हैं। ग्राम संगठन की सभी महिलाएँ वन विभाग और स्कूल के विद्यार्थियों के साथ मिलकर पौधारोपण व सामाजिक कार्य और साफ सफाई व नशा मुक्ति के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।

कमलेश भैक का कहना था कि महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना हमारा उद्देश्य है। हमारा एक सीएलएफ-क्लस्टर लेवल का फैडरेशन भी बन चुका है, जिसमें नौ पंचायत के एक सौ से अधिक एसएचजी जुड़े हैं। मेरे ब्लॉक नारकंडा में एक फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी का गठन हो गया है। इसमें 750 महिलाएँ मिल कर काम करेंगी। कोटगढ़ महिला ग्राम संगठन की पांच महिलाएं कमलेश भैक, पूनम चौहान, रुचि चौहान, शर्मीला भैक, वनिता सिंघा इस एफपीसी में भी बोर्ड ऑफ डायरेक्ट के रूप में कार्य कर रही हैं। ये हमारे लिए बड़े गर्व की बात है। इस कंपनी का नाम नारकंडा सिंगल फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड है।

कमलेश शर्मा ने बताया कि मैंने CORSETY SHIMLA NRLM से FLCRP का प्रशिक्षण अगस्त 2022 में लिया है। मैं हिमाचल प्रदेश में लोकल मास्टर ट्रेनर के रूप में भी कार्य कर रही हूँ। अभी मैं नारकंडा में कम्युनिटी आडिटर के रूप में भी कार्य कर रही हूं।

कौशल विकास परियोजना के तहत भी बहुत सारे ग्रुप काम कर रहे हैं। जैसे सिलाई-कटाई, बुनाई व बैग बनाना इत्यादि। प्रशिक्षण लेने के बाद मुझमें सब से बड़ा परिवर्तन यह हुआ कि मैं आज आर्थिक रूप से सशक्त एवं आत्मनिर्भर हूं। साथ ही मैंने अपनी पहचान खुद बना ली है। मेरे समूह की महिलाएं आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो गईं हैं। सभी महिलाएं अपनी आजीविका खुद कमा रही हैं और सभी महिलाएँ अपने परिवार की भी आर्थिक सहायता करती हैं। सबसे बड़ी चुनौती महिलाओं को अपने द्वारा बनाया गया सामान जैसे आचार-चटनी इत्यादि बना तो लेती हैं, पर अब इसे बेचें कहाँ? इसके लिए सरकार की तरफ से प्रोत्साहन दिया जाता है परंतु यह काफी नहीं है, पैकेजिंग पैकिंग के लिए हमें सामान चंडीगढ़ से मंगवाना पड़ता है, जिससे प्रोडक्ट की कीमत बढ़ जाती है। यदि लोकल स्तर पर हमें मशीनें और कुछ सहूलियतें प्रदान की जाएं तो पैकिंग का सामान भी हम खुद तैयार कर सकते हैं। इससे सामान की कीमत कम हो जाएंगी। लोग अधिक खरीद कर सकेंगे और महिलाओं को अपने परिवारों को आर्थिक तौर पर मजबूत बनाने में सहयोग मिल सकेगा।◆◆◆ **प्रस्तुति : हितेन्द्र शर्मा**

समाज में ऊंच-नीच का भाव उचित नहीं

ठेंगड़ी शाखा, शाहपुर द्वारा हिंदू सम्राज्य दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से खंड संघचालक श्रीमान रविंद्र कटोच जी, सेवानिवृत अधिकारी के. के. डोगरा जी एवं मुख्य वक्ता के रुप में श्रीमान अशोक जी प्रांत कार्यकारिणी सदस्य, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हिमाचल प्रांत उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता ने शिवाजी महाराज के जीवन के बारे में विषय रखा। उन्होंने सभी को शिवाजी महाराज की तरह नीतियों पर चलने का संदेश दिया। मुख्य वक्ता ने समाज में समरसता को बढ़ावा देने की भी बात की। उन्होंने कहा कि समाज में ऊंच-नीच का भाव नहीं होना चाहिए। सभी का एक जल का स्थान, एक पूजा स्थान और एक शमशान होना चाहिए।

गीता जयंती पर श्लोकों का उच्चारण

गीता जयंती के उपलक्ष्य में सरस्वती विद्या मंदिर बालकरूपी में गीता के 12वें अध्याय के श्लोकों का संस्कृत आचार्या श्री मति तारकेश्वरी जी द्वारा सामूहिक

उच्चारण करवाया गया।और विद्यालय में सदन अनुसार प्रतियोगिता करवाई गई। विद्यालय के इसमें चारों सदनों (सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, लक्ष्मी बाई सदन) ने भाग लिया। जिसमें लक्ष्मी बाई सदन विजेता रहा।

विश्व योग दिवस पर कार्यक्रम

सरस्वती विद्या मंदिर कमला नगर में पतंजलि योगपीठ तथा हिमाचल शिक्षा समिति के सौजन्य से विश्व योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पतंजलि योगपीठ की कर्मठ कार्यकर्ता श्रीमती सुषमा गुप्ता जी ने सभी आचार्य दीदियों तथा भैया बहनों को उपयोग क्रियाएं सिखाएं विद्यालय की उप प्रधानाचार्य श्रीमती रीनू ठाकुर ने उनका धन्यवाद किया तथा सभी भैया बहनों से आजीवन योग अपनाने का आवाहन किया।◆◆◆

शिवाजी महाराज के जीवन पर डाला प्रकाश

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के छह उत्सवों में से एक हिंदू साम्राज्य दिवस है जो कि ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी 20 जून को है इस दिन को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ योल खंड ने हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव पर खंड का बड़ा एकत्रीकरण किया।

हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव के शुभ उपलक्ष्य पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ योल खंड ने टंग मैदान में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें माननीय विभाग संघचालक श्रीमान भूषण रैना जी, माननीय खंड संघचालक डाक्टर संदीप अवस्थी जी विशेष रूप से उपस्थित रहे, कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हिमाचल प्रांत टोली के सम्मानित सदस्य, श्रीमान अशोक जी, मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित हुए व अपने उद्बोधन के माध्यम से छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला, उन्होंने हिन्दू समाज ने जो पूर्व में सामाजिक सांस्कृतिक दमन संघठित ना होने के कारण झेला है और वर्तमान में भी जो कुचक्र हिन्दू समाज को जातियों में तोड़ने के लिए चल रहे उनके बारे में सचेत किया व समाज से राष्ट्रीय स्वयंसेवक के साथ शाखा के माध्यम से जुड़ते हुए संगठित होने का आग्रह किया। कार्यक्रम में योल खंड के सभी मंडलों से 173 स्वयंसेवक उपस्थित रहे।◆◆◆

मंडी में नव दंपत्ति सम्मेलन परिवार के आदर्श आयामों पर मंथन

मंडी जिला के मंडी विभाग में ब्रह्म कुमारी आश्रम रिवालसर में एक विशेष कुटुंब प्रबोधन गतिविधि के अंतर्गत नव दंपत्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में कुल 45 लोग उपस्थित रहे। इसमें 14 नव दंपति, 14 अन्य मातृ शक्ति, 14 अन्य पुरुष और 3 बच्चे शामिल रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक गीत और रत्नाकराधौतपदां श्लोक से हुआ, जिसके बाद भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन किया गया। जिला प्रमुख डॉ. रमेश जी ने अधिकारियों का परिचय कराया। श्रीमती कंचन जी, नव दंपत्ति आयाम की प्रांत प्रमुख ने विवाह संस्कार के समय पढ़ी जाने वाली शप्तपादी की व्याख्या करते हुए पति-पत्नी के आपसी सहयोग और परिवार के साथ भावनात्मक विकास के महत्व पर चर्चा की। प्रांत पुरोहित संपर्क आयाम प्रमुख श्रीमान सुरेश भारद्वाज जी ने सोलह संस्कारों पर विस्तृत चर्चा करते हुए विवाह (पंद्रहवां संस्कार) से पूर्व किए जाने वाले 14 संस्कारों के महत्व को उजागर किया और संस्कारयुक्त भावी युवा पीढ़ी तैयार करने के विषय में अपने विचार व्यक्त किए। प्रांत अध्यापक संपर्क आयाम प्रमुख श्रीमान विनोद जी ने पंच महायज्ञ पर व्याख्यान दिया। नव दंपत्तिओं आयाम प्रमुख द्वारा दो खेल भी आयोजित किए गए, जिससे प्रतिभागियों में उत्साह और समरसता का माहौल बना। मंडी जिला मंगल आयाम प्रमुख श्री पीतांबर जी, विभाग पुरोहित संपर्क आयाम प्रमुख श्रीमान सुख राम जी, और विभाग संयोजक ने भी कुटुंब प्रबोधन के विभिन्न विषयों पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम का संचालन जिला संघ चालक श्रीमान पवन मिन्हास जी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।◆◆◆

साहित्य विमर्श से ही व्यक्तित्व निर्माण संभव : प्रो. वीर सिंह रांगडा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक प्रो. वीर सिंह रांगड़ा ने मातृवंदना संस्थान, शिमला द्वारा आयोजित 'साहित्य संवाद' में अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान में विश्व वैचारिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। सनातन मानवता पर केंद्रित है व्यक्ति पर नहीं सनातन सदियों से चली आ रही विचारधारा का सार है जो ऋषि मुनियों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के रूप में प्रतिष्ठित हुआ और आज भी वैदिक लौकिक साहित्य तथा मौखिक परंपरा के तौर पर लोक साहित्य में विद्यमान है। इसी राष्ट्रवाद के प्रचार के लिए विभिन्न संस्थाओं, जागरण पत्रिकाओ और विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से कार्य हो रहा हैं, जो समाज को संगठित करने की दिशा में कारगर साबित हुआ है। अतीत से सीख और वर्तमान में भविष्य की चिंता सद् साहित्य के विमर्श से ही संभव है। वर्तमान में पत्रिकाओं और पुस्तकों के साथ डिजिटल माध्यम से एक वैचारिक आंदोलन चल रहा है जिसमें कुछ राष्ट्र विरोधी ताकतें भारतीयता, सनातन, अस्मिता और परंपराओं को चुनौती दे रहे हैं, ऐसे में राष्ट्र सर्वोपरि होना चाहिए। क्योंकि राष्ट्र बचेगा, तभी सनातन धर्म, दर्शन और संस्कृति भी की जीवंतता बनी रहेगी। प्राचीन और वर्तमान साहित्य ज्ञान-विज्ञान और अध्यात्म से भरा पड़ा है, जिसका अनुसरण करने के लिए पूरा विश्व लालायित है, ऐसे में साहित्य संवाद की भूमिका प्रासंगिक और उपयोगी हो जाती है।

साहित्य में नैतिक मूल्य तथा व्यक्ति निर्माण की प्रमुखता का होना आवश्यक : प्रताप सिंह समयाल

साहित्य संवाद कार्यक्रम में प्रांत प्रचार प्रमुख श्री प्रताप सिंह समयाल ने कहा- पुस्तक मेला अन्य पारंपरिक मेलों से हटकर लेखकों, प्रकाशकों, पाठकों के महामिलन और परस्पर संवाद का सुनहरा अवसर होता है। साहित्य, लेखक और अध्ययन एवं चिंतन तथा आचरण का विषय होना चाहिए। साहित्य में नैतिक मूल्य तथा व्यक्ति निर्माण की प्रमुखता होनी चाहिए। भारतीय संस्कृति में श्रौत परंपरा ज्ञान विज्ञान का आधार साहित्य रहा है। वैचारिक द्वंद्व वर्तमान स्थिति में चिंता का विषय बनता जा रहा है। हर कोई अपना विमर्श स्थापित करने की होड़ में राष्ट्र की परंपरा और सौहार्द को तोडने के लिए अग्रसर है। सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव के व्यक्तित्व, व्यवहार और मस्तिष्क को प्रभावित करने लगा है, जबकि उसका उपयोग मानव कल्याण के लिए होना चाहिए। सूचना तंत्र की आड़ में मीडिया के माध्यम से होने वाला दुष्प्रचार समाज में अनेक विसंगतियां भी पैदा कर रहा है।

समाज और संस्कृति का दर्पण है साहित्य :डॉ. दयानंद शर्मा

दूसरे मुख्य वक्ता मातृवंदना के संपादक डॉ दयानंद शर्मा कहा कि साहित्य समाज और उसकी संस्कृति का दर्पण है। जितना महत्त्वपूर्ण योगदान साहित्य निर्माण करने वाले विद्वान लखेकों एवं कवियों का है, उतनी ही उपादेयता साहित्य में रूचि रखने वाले पाठकों की हैं। वेदों से

मातृवंदना संस्थान द्वारा साहित्य संवाद का आयोजन

ही काव्य अथवा साहित्य की उत्पति हुई है। भारतीय प्राचीन साहित्य में धर्म, संस्कृति, इतिहास और अध्यात्म का समावेश तो है ही किन्तु साहित्य शास्त्र के सम्पूर्ण लक्षणों एवं तत्त्वों जैसे रस, गुण, रीति, छन्द और अलंकारों से भी वह विभूषित है। उन्होंने मातृवंदना मासिक पत्रिका के प्रकाशन की लंबी यात्रा और विशेषांकों की परंपरा पर भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मातृवंदना के अब तक अनेक विशेषांक प्रकाशित किये जा चुके हैं, जिनमें हिमाचल में देव परंपरा, पर्यटन, लोक संस्कृति, सामाजिक समरसता 1857 की क्रान्ति, आतंकवाद, मंदिर, सेवा कार्य, श्रीराम जन्मभूमि प्रमुख हैं। यह पत्रिका 1992 में पत्रक के रूप में शुरू हुई उसके बाद मासिक तौर पर प्राचीन विज्ञान, हिमाचल प्रदेश सहित देश के विभिन्न प्रांतों में हजारों घरों तक पहुंचकर भारतीय ज्ञान परंपरा राष्ट्रवाद, धर्म-संस्कृति एवं समसामयिक विषयों के प्रचार का प्रमुख माध्यम है। साहित्य संवाद में मातृवंदना के अध्यक्ष अजय सूद ने बताया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिए विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में निरंतर प्रयास किया जा रहा है। साहित्य संवाद में शिमला के अनेक बुद्धिजीवियों, पत्रकारों, लेखकों साहित्यकारों ने भी भाग लिया।

पुस्तक मेले में मातृवंदना संस्थान की प्रदर्शनी

राष्ट्रीय पुस्तक मेला शिमला में 21 से 30 जून 2024 तक मातृवंदना संस्थान द्वारा पत्रिका एवं पुस्तक प्रदर्शनी एवं विक्रय का आयोजन किया गया इस अवसर पर संस्थान की ओर से मातृवंदना पत्रिका के विशेषांक और राष्ट्रवादी साहित्य की प्रदर्शनी आयोजित की गई। संस्थान द्वारा वर्ष प्रतिपदा के अवसर पर प्रकाशित श्री रामलला का कैलेंडर तथा श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक भी वितरित किया गया।

पुस्तक मेले में शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का प्रदर्शन एवं विक्रय

ठाकुर राम सिंह इतिहास शोध संस्थान द्वारा पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक मेले में पुस्तक प्रदर्शनी एवं विक्रय हेतु एक स्टॉल लगाकर पुस्तकों का विक्रय किया गया। संस्थान द्वारा प्रकाशित हिमाचल प्रदेश की लोक गाथाएं, हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर, पश्चिमी हिमालय में ऋषि परंपरा काल गणना पावन पत्राचार आदि पुस्तकों का भी प्रदर्शन एवं विक्रय किया गया।

हिमाचल में एक और उपचुनाव का बोझ

भारत विश्व का प्राचीन लोकतंत्र का महान् देश है जहां हर समय कोई न कोई चुनाव चलता रहता है और सरकार का अधिकांश समय विकास की बजाय राजनीति में गुजर जाता है। और अब हिमाचल प्रदेश भी इसमें शामिल हो गया है। दो वर्षों के बीच अभी सरकार ठीक से एडजस्ट भी नहीं हो पाई थी कि लोकसभा के चुनाव आ गये। और इसी बीच राजनीतिक उठा पटक से हिमाचल को छह विधानसभा सीटों पर चुनाव में उतरना पड़ा। अभी इस मतदान की स्याही सूखी भी नहीं थी कि चुनाव के नतीजों से पहले ही निर्दलीय विधायकों के त्यागपत्र को स्वीकार करके आधे हिमाचल को एक और चुनाव में झोंक दिया गया। एक और चुनाव का बोझ हिमाचल की जनता पर डाल दिया गया। इसके बाद शायद जिला परिषद और पंचायत चुनाव का सीजन आने वाला है। ऐसे में सरकार के पास लोगों की समस्याओं को सुलझाने तथा विकास की चिंता करने की फुर्सत ही कहां? असल में हिमाचल की जनता ने कांग्रेस सरकार को पूर्ण बहुमत देकर विधानसभा में भेजा था, परंतु मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू और हमीरपुर, कांगड़ा के विधायकों के आपसी टकराव के कारण पहले उप चुनाव हुआ और उसके बाद विपक्ष द्वारा सरकार बनाने की जल्दबाजी में निर्दलीय विधायकों के त्यागपत्र के बाद दूसरे उप चुनाव की मार झेलनी पड़ी है। चुनाव में हार जीत चाहे किसी की भी हो, परंतु राजनैतिक अस्थिरता से जनता खुद को ठगा हुआ महसूस कर रही है, यह जमीनी हकीकत है। नेताओं का कपड़ों की तरह पार्टियां बदलना, इधर से उधर और उधर से इधर आना-जाना, जीतना हारना, वादे करना, फिर गायब हो जाना, कितना विकास कर पाएगा यह तो समय ही बताएगा। हां उन कार्यकर्ताओं की पीड़ा की सुध लेने वाला कोई नहीं है जो कई सालों से जिनका विरोध करते रहे उनके लिए नए नेता का झोला उठाकर चलना बहुत कष्टदायक होता है। इस राजनीति में हिमाचल का जनमानस अपना तालमेल बिठाने में खुद को सहज महसूस नहीं कर रहा है। परंतु फिलहाल मौसम और राजनीति दोनों पूरी तरह से उफान पर हैं। सोच समझकर वोट कीजिए और अपना प्रतिनिधि चुनकर निश्चिंत हो जाइए।

गांव का इतिहास का लोकार्पण

गांव के इतिहास के बिना अधूरा है भारत का इतिहास

- डा चेतराम गर्ग

हिमाचल प्रदेश के गांव का इतिहास पुस्तक दो खंडों में प्रकाशित पुस्तकों के लोकार्पण समारोह में शोध संस्थान नेरी के निदेशक एवं मार्गदर्शन डा. चेतराम गर्ग ने कहा- 'गांव का इतिहास' भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। भारत के इतिहास को समझने के लिए गांव के इतिहास, लोक संस्कृति, परंपराओं, जनजीवन और सामाजिक व्यवस्थाओं को समझना बहुत जरूरी है। भारत का अधिकांश इतिहास आक्रमणकारी अंग्रेजों और मुगलों द्वारा लिखा गया विकृत इतिहास भारतवर्ष के शिक्षण संस्थानों में पढ़ा-पढ़ाया जा रहा है। अत: विसंगतियों को हटाने के लिए अपेक्षित संशोधन एवं पुनर्लेखन जरूरी है। 'हिमाचल प्रदेश के वृहद् इतिहास' के लेखन की परियोजना पर भारत सरकार के सहयोग से कार्य किया जा रहा है, जिसमें प्राचीन इतिहास , आधुनिक इतिहास, स्वाधीनता का इतिहास, संस्कृति, समाजशास्त्र, कला, पुरातत्व आर्थिक चिंतन आदि विषयों का समावेश होगा।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रसिद्ध समाजसेवी राजकुमार वर्मा ने कहा कि आज भी आजादी की अभिव्यक्ति के नाम पर देश को तोड़ने और देश विरोधी ताकतों के साथ मिलकर षड्यंत्र रचाए जा रहे हैं परंतु भारत की राष्ट्रवादी ताकतों की मजबूती के सामने देश को कमजोर करने का एजेंडा टिक नहीं सकता। सरदार पटेल विश्वविद्यालय मंडी के पूर्व उप कुलपति एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर डी.डी. शर्मा ने कहा किसी भी देश का इतिहास उसकी सांस्कृतिक विरासत समाज व्यवस्था और नागरिकों के लिए गौरव का विषय होता है। समीक्षक प्रोफेसर ओम प्रकाश शर्मा ने बताया कि 'गांव का इतिहास' पुस्तक में चयनित गांव के इतिहास, संस्कृति मेले, पर्व, त्यौहार, जनजीवन, सामाजिक व्यवस्था, रीति रिवाज, लोकगीत, लोक कथाएं, देव परंपरा आदि विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया है।

कार्यक्रम के दौरान इन पुस्तकों के संपादक डॉ अंकुश भारद्वाज, डॉ करम सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंच का संचालन डॉ अरुण गुलेरिया और डॉ प्रियंका वैद्य ने किया। कार्यक्रम में श्री महीधर, लेखक एस आर हरनोट, डॉ. डी.के गुप्ता,आरती गुप्ता भारतीय कुटियाला भी शामिल रहे।

श्रावण पूर्णिमा

कर्म शुद्धि के लिए उपक्रम का अवसर

श्रावणी पूर्णिमा का हिंदू धर्म में बड़ा ही महत्व है। यह श्रावण मास की पूर्णिमा है जिसमें ब्राह्मण वर्ग अपनी कर्म शुद्धि के लिए उपक्रम करते हैं। ग्रंथों में इस दिन किए गए तप और दान का महत्त्व उल्लेखित है। इस दिन रक्षाबंधन का पवित्र त्योहार मनाया जाता है। इसके साथ ही श्रावणी उपक्रम, श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को आरंभ होता है। श्रावणी पूर्णिमा के दिन यज्ञोपवीत के पूजन तथा उपनयन संस्कार का भी विधान है।।।

महत्त्व

हिंदू धर्म में सावन माह की पूर्णिमा बहुत ही पवित्र व शुभ दिन माना जाता है। सावन पूर्णिमा की तिथि धार्मिक दृष्टि के साथ ही साथ व्यावहारिक रूप से भी बहुत ही महत्त्व रखती है। इस माह को भगवान शिव की पूजा-उपासना का महीना माना जाता है। सावन में हर दिन भगवान शिव की विशेष पूजा करने का विधान है। इस प्रकार की गई पूजा से भगवान शिव शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों की सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। इस माह की पूर्णिमा तिथि इस मास का अंतिम दिन माना जाता है। अत: इस दिन शिव पूजा व जल अभिषेक से पूरे माह की शिव भक्ति का पुण्य प्राप्त होता है। प्राचीन काल में आज के दिन ब्राह्मण अपने यजमानों को रक्षा का धागा अर्थात राखी बांधते थे और साधु-संत एक ही जगह पर चार मास रुक कर अध्ययन-मनन और पठन-पाठन प्रारंभ करते थे। ऋषि-मुनि और साधु-संन्यासी तपोवनों से आकर गांवों व नगरों के समीप रहने लगते थे और एक ही स्थान पर चार मास तक रहकर जनता में धर्म का प्रचार (चातुर्मास) करते थे। इस प्रक्रिया को श्रावणी उपक्रम कहा जाता है। श्रावण पूर्णिमा के दिन चंद्रमा अपनी पूर्ण कलाओं के साथ होता है, अत: इस दिन पूजा- उपासना करने से चंद्रदोष से मुक्ति मिलती है। श्रावणी पूर्णिमा का दिन दान, पुण्य के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए इस दिन भोजन के बाद गाय आदि को चारा खिलाना, चींटियों, मछलियों आदि को दाना खिलाना चाहिए। इस दिन गोदान का बहुत महत्त्व ग्रंथों में बतलाया गया है। श्रावणी पर्व के दिन जनेऊ पहनने वाला-हर धर्मावलंबी मन, वचन और कर्म की पवित्रता का संकल्प लेकर जनेऊ बदलता है। इस दिन ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान देना और भोजन कराया जाना चाहिए। इस दिन भगवान विष्णु और लक्ष्मी की पूजा का विधान है। ।◆◆◆

व्रत व पूजा विधि

श्रावण मास की पूर्णिमा पर वैसे तो विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न पर्वों के अनुसार पूजा विधियां भी भिन्न होती हैं। लेकिन चूंकि इस दिन रक्षासूत्र बांधने या बंधवाने की परंपरा है तो उसके लिए लाल या पीले रेशमी वस्त्र में सरसों, अक्षत रखकर उसे लाल धागे (मौली या कच्चा सूत हो तो बेहतर) में बांधकर पानी से सींचकर तांबे के बर्तन में रखें। भगवान विष्णु, भगवान शिव सहित देवी-देवताओं, कुलदेवताओं की पूजा कर ब्राह्मण से अपने हाथ पर पोटली का रक्षासूत्र बंधवाना चाहिए। तत्पश्चात् ब्राह्मण देवता को भोजन करवाकर दान-दक्षिणा देकर उन्हें संतुष्ट करना चाहिए। साथ ही इस दिन वेदों का अध्ययन करने की परंपरा भी है। इस पूर्णिमा को देव, ऋषि, पितर आदि के लिए तर्पण भी करना चाहिए। मान्यता है कि-विधि-विधान से यदि पूर्णिमा व्रत का पालन किया जाए तो वर्ष भर वैदिक कर्म न करने की भूल भी माफ हो जाती है। मान्यता यह भी है कि वर्ष भर के व्रतों समान फल श्रावणी पूर्णिमा के व्रत से मिलता है।

यहां की थी भीम ने हिडिंबा से शादी

डॉ. जगदीश शर्मा पांगणा

सुकेत रियासत के सेन शासकों की प्रथम स्थायी राजधानी पांगणा पुरातत्त्व एवं पर्यटन की दृष्टि से सुप्रसिद्ध है। पांगणा की प्रसिद्धि का कारण कला की दृष्टि से उत्कृष्ट देवी कोट का पैगोड़ा वे भंडार शैली में बना मंदिर है। इस छह मंजिला भवन के निर्माण में उस काल के कुशल शिल्पकारों ने जिस कला कौशल का परिचय दिया है, उसे देख आधुनिक शिल्पकार भी दंग रह जाते हैं। इस भवन की द्वार शाखाओं, झरोखों, खंभों पर की गई नक्काशी पर्यटकों को आकर्षित किए बिना नहीं रहती। इसके अलावा पांडवकालीन शिव मंदिर की प्रस्तर कला उल्लेखनीय है। गर्भगृह का द्वार दो पशु (महिष) मुख शिला पर स्थित है। प्रवेश द्वार के स्तंभों पर द्वारपाल नाग व बेल-बूटों का अलंकरण हुआ है। द्वार शाखा के ऊपरी फलक पर नवग्रहों की सूक्ष्म नक्काशी, भद्रमुख देखने योग्य है। मंदिर के गर्भगृह में शिवलिंग प्रतिष्ठित है। शिवलिंग के पृष्ठभाग में शिव पार्वती व गणेश का युगल विग्रह एक ऊंचे सिंहासन पर विराजमान है।

गर्भगृह में प्रवेशद्वार की दीवार व गुंबद पर देवी-देवताओं की भव्य मूर्तियां स्थापित हैं, जिन पर आधुनिक कला प्रेमियों ने पेंट पोतकर मंदिर व प्रस्तर कला की पौराणिकता को प्रभावित किया है। मंदिर के आगे सुसज्जित शिव वाहन नंदी का स्थानक विग्रह विराजमान है। नंदी की पूंछ पकड़े बाल रूप गोपाल की अद्वितीय मूर्ति विद्यमान है। करसोग के शिव मंदिरों के आगे खड़े इतने विशाल नंदी के अन्यत्र कहीं दर्शन नहीं होते। मंदिर की बाहरी दीवारों पर स्थापित विशाल यंत्र शिलाएं इस पूजा स्थल के तंत्रपीठ होने का प्रमाण हैं। जनश्रुति है कि पांडवों ने इस मंदिर का निर्माण किया तथा भीम व हिडिंबा का विवाह यहीं हुआ था। कालांतर में यह मंदिर जल गया था। विद्युत बोर्ड के सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता केडी खोसला, अभियंता सुभाष व स्थानीय वरिष्ठ नागरिक मतिधर शर्मा के कुशल नेतृत्व में स्थानीय लोगों व कर्मचारियों के अथक सहयोग से इसका जीर्णोद्धार किया गया। मंदिर निर्माण व सभा मंडप है शिल्पी घांथुराम (बड़सु-मंडी बल्ह) द्वारा सीमेंट से बनाई देवी-देवताओं की मूर्तियां कलाकार की कला कुशलता-का अमाण हैं। गर्भगृह में 1999 में स्थापित शिवलिंग खोसला द्वारा नर्मदा से लाया गया व जगदगुरु शंकराचार्य माध्वाश्रम जी महाराज जी ने स्पर्श कर इसकी प्रतिष्ठापना की। प्राचीनकाल से विख्यात रहे इस शिव मंदिर में ऋषि मुनि आश्रय लेते रहे हैं। अपनी अनूठी शिल्पकला के कारण पुरातत्वेत्ताओं व इतिहासकारों के लिए पुरा ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा के केंद्र बने इस मंदिर में साल भर पर्यटकों व श्रद्धालुओं की चहल-पहल रहती है, परंतु तारारात्रि, शिवरात्रि और श्रावण के सोमवायों को दूर-दूर से श्रद्धालु यहां आकर पूजा-अर्चना कर अपनी मन्नौतियां लेकर व पूर्ण कर स्वयं को धन्य समझते हैं।◆◆◆

ओडिशा की तकनीक से होगा मत्स्य पालन

केंद्रीय मीठा जल जीवन पालन अनुसंधान भुवनेश्वर ओडिशा की तकनीक से हिमाचल में नीलक्रांति को बढ़ावा मिलेगा। संस्थान द्वारा जल्द ही प्रदेश को सीफाब्रूड मत्स्य आहार की तकनीक और ज्यंती रोहू व उन्नत कतला प्रजाति की मछलियों का बीज भी उपलब्ध करवाया जाएगा। इस संदर्भ में ओडिशा व हिमाचल मत्स्य पालन विभाग के मध्य दो एमओयू साइन हुए हैं। यह एमओयू हिमाचल के मत्स्य निदेशक विवेक चंदेल और अनुसंधान भुवनेश्वर से आए निदेशक प्रमोद कुमार साहू के बीच बिलासपुर में आयोजित कार्यशाला के दौरान हुए हैं। बिलासपुर में टूरिज्म के होटल लेक व्यू कैफे में मात्स्यिकी विभाग द्वारा एक्वाकल्चर में उन्नत मछली किस्मों और कार्प मत्स्य ब्रूड स्टॉक आहार का महत्त्व विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता निदेशक मत्स्य विभाग विवेक चंदेल ने की। मत्स्य विभाग के निदेशक विवेक चंदेल ने बताया कि मत्स्य पालन विभाग किसानों की आर्थिकी में सुधार लाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि इस समझौता ज्ञापन का लाभ निकट भविष्य में देखने को मिलेगा तथा किसानों की आर्थिकी में अवश्य सुधार आएगा। कार्यशाला में केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान भुवनेश्वर से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. खुटिया मुर्मू तथा डॉ. समीरन नंदी ने उन्नत मछली किस्मों तथा मत्स्य ब्रूड स्टॉक आहार के महत्त्व के बारे में विभाग के अधिकारियों तथा उन्नत मत्स्य किसानों को पूर्ण जानकारी दी। उन्होंने बताया कि उन्नत मछली किस्मों जैसे कि अमूर कार्प, ज्यंती रोहू तथा उन्नत कतला प्रजाति की मछलियों की वृद्धि दर पारंपरिक प्रजातियों की तुलना में 15 से 20 प्रतिशत अधिक है तथा इन प्रजातियों का पालन करके मत्स्य किसान अधिक आय प्राप्त कर सकते हैं।◆◆◆

प्रदेश विश्वविद्यालय अपने कोचिंग सेंटर में जल्द शुरू करेगा आईएएस-एचएएस की निशुल्क कोचिंग

प्रदेश विश्वविद्यालय के निशुल्क कोचिंग सेंटर में एचएएस और आईएएस की फ्री कोचिंग के लिए अब प्रोसेस शुरू हो जाएगा। इससे पहले चुनाव आयोग से परमिशन न मिलने के चलते ये मामला लटका हुआ था। ऐसे में अब यह माना जा रहा है कि आचार संहिता के बाद ही छात्र फ्री कोचिंग ले पाएंगे। यूनिवर्सिटी की ओर से इस बारे में प्रदेश सरकार को प्रस्ताव भेजा गया था, लेकिन इसके लिए मंजूरी ही नहीं मिल पाई। एचपीयू के इस कोचिंग सेंटर में कई सालों से पूर्व-परीक्षा प्रशिक्षण केंद्र की ओर से छात्रों को परीक्षाओं की तैयारी करवाई जाती है। यह कोचिंग अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों को प्रदान की जाती है। अनुसूचित जाति व पिछड़ा वर्ग से संबंधित उम्मीदवारों, जिनके परिवार की वार्षिक आय आठ लाख रुपए से कम है और अनुसूचित जनजाति वर्ग के उम्मीदवारों, जिनके परिवार की वार्षिक आय पांच लाख से कम है, उन उम्मीदवारों को कोचिंग निःशुल्क प्रदान की जाती है। इसके अलावा सामान्य वर्ग के उम्मीदवारों से कोचिंग के लिए 2500 रुपए प्रति महीना तय की गई है। पूर्व परीक्षा प्रशिक्षण केंद्र के निदेशक प्रो जोगिंद्र सिंह धीमान ने बताया कि अब कोड ऑफ कंडक्ट की समाप्ति के बाद छात्रों के लिए कक्षाएं शुरू कर दी जाएगी ताकि छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर सके।◆◆◆

फिर बड़े पर्दे पर दिखेंगी गरली की हवेलियां

धरोहर गांव गरली व परागपुर की प्राचीन भव्य हलेलियों में एक बार फिर लाइट, कैमरा व एकशन गूंज सुनाई देगी। इसके लिए मुंबई से बालीवुड की टीम गरली क्षेत्र में पिछले तीन-चार दिनों से डेरा डाले हुए है। एक या दो हफ्ते में यहां बालीवुड हिंदी फिल्म एके -47 बड़े पर्दे की फिल्म शूट होगी। बालीवुड से आई टीम ने गरली क्षेत्र की प्राचीन भव्य हवेलियों की लोकेशन अपने कैमरे में कैद करके फाइनल की। बताया जा रहा है कि फिल्म में कॉमेडियन कपिल शर्मा के शो में चंदू चाय वाले की भूमिका में काम कर रहे चंदन प्रभाकर पंजाबी गायक जिप्पी ग्रेबाल के आलावा नामी फिल्मी सितारे यहां छोटे से गांव में नजर आएंगे। बताया जा रहा है कि करीब एक महीना लगातार गरली परागपुर व साथ लगते अन्य गांवों में यह फिल्म शूट होगी। उपरोक्त फिल्म के कास्टिग डायरेक्टर प्रवीण गरलानी ने बताया कि इस फिल्म में हिमाचल के युवाओं व अन्य लोगों को भी काम करने का सुनहरा मौका है। प्रवीण गरलानी ने बताया कि जो भी युवा लडके-लड़कियां इस फिल्म के लिए ऑडिशन देना चाहते है वह 98168-82680 मोबाइल पर संपर्क कर सकते है। इससे पहले भी धरोहर गांव गरली में फिल्मी जगत के नामी सितारे ऋषि कपूर आदि कलाकारों की बालीवुड फिल्म 'चिंटू जी', 'बांके की क्रेजी बारात' फिल्में यहां शूट हो चुकी हैं।

भारत सरकार की ओर से हिमाचल को एक और पुलिस बटालियन की सौगात

प्रदेश में हिमाचल पुलिस की एक नई आईआरबीएन बनेगी। नई आईआरबीएन के लिए पुलिस विभाग की ओर से जमीन की तलाश शुरू कर दी गई है। नई आईआरबीएन बनाने के लिए बद्दी में जमीन की तलाश की जा रही है। हिमाचल प्रदेश को भारत सरकार ने एक और पुलिस बटालियन की सौगात दी है। पुलिस विभाग की ओर से पुलिस जिला बद्दी और पुलिस जिला नूरपुर में एक महिला पुलिस की बटालियन और एक पुरुष बटालियन के लिए भारत सरकार को प्रस्ताव भेजा था। भारत सरकार ने इस प्रस्ताव पर हिमाचल में एक नई आईआरबीएन बनाने को मंजूरी दे दी है। हिमाचल में आईआरबीएन बनाने के लिए केंद्र सरकार की ओर से पुलिस महानिदेशक को मंजूरी पत्र भेजा गया है।

हिमाचल प्रदेश में अब तक छह आईआरबीएन हैं और अब सातवीं आईआरबीएन बनाई जाएगी। आईआरबीएन के लिए जगह का चयन होने के बाद केंद्र सरकार की ओर से एकमुश्त 50 करोड़ रुपए दिए जाएंगे। इसके अलावा भवन निर्माण के लिए केंद्र सरकार की ओर से 30 करोड़ रुपए जारी किए जाएंगे। पुलिस बटालियन के जगह का चयन होने के बाद पुलिस जवानों के नए भवन का निर्माण किया जाएगा। इसके लिए केंद्र सरकार की ओर से भवन का निर्माण जैसे-जैसे होता जाएगा, उसी हिसाब से अलग-अलग किस्तों में 30 करोड़ की राशि जारी की जाएगी। केंद्र सरकार ने हिमाचल प्रदेश में पुलिस जवानों की नई बटालियन (आईआरबीएन) के लिए मंजूरी दे दी है। हिमाचल प्रदेश में बनने वाली नई पुलिस बटालियन के लिए पुलिस जिला बद्दी में जगह का चयन किया जाएगा।

1007 पदों पर भर्ती

हिमाचल प्रदेश में आईआरबीएन बनने से जहां जवानों की कमी दूर होगी, वहीं सैकड़ों बेरोजगारों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। आईआरबीएन में पुलिस अधिकारियों, मिनिस्ट्रियल स्टाफ के सात, मेडिकल स्टाफ के चार, वायरलैस स्टाफ के 33, कुक, सफाई कर्मी और चालकों सहित पुलिस जवानों के 1007 पद भरे जाएंगे।◆◆◆

माधवी लता का विवाह आम वृक्ष से करने की प्रथा - दुर्गेश नंदन

पलमपुर से पंचरुखी, पंचरुखी से पाहड़ा, भौंडु, भौरां, दरमन, नागवन के रास्ते होते खिलने वाले फूलों, पेड़ों और प्राकृतिक सुंदरता के साथ साथ जब एक बार फिर कांगड़ा चित्रकला के रंग भेदों का जिक्र करते रंधावा साहब ने माधवी लता और आम के पेड़ की ब्याह की बात बताई तो मुझे कई अनुभव, दृश्य, लोक कथा प्रसंग और कालिदास याद आये।

कालिदास ने अभिज्ञान शाकुंतलम् में माधवी (शंकुतला) की मनःस्थिति का वर्णन उस समय किया है जब शकुंतला अपने पसंदीदा वर से मिलने जाती है। माधवी लक्ष्मी का नाम है। माधवी एक लता है ,लोक में माधवी लता और आम के पेड़ की शादी का प्रचलन रहा है। कांगड़ा चित्रों में भी प्रायः वृक्षों से लिपटी लताएं दिखाई देती हैं यहां लताएं स्त्री का प्रतीक है और वृक्ष पुरुष का। यही प्रकृति का नियम है।

आजकल भी होती है आम की शादी। यह प्रथा आज भी कहीं कहीं निभाई जाती है। लोक में जिस समय मिट्टी के घरों का रिवाज़ था , मोड़े होती थीं। ऊआनों बीचोंबीच तो उस समय बौखरी (झाड़ू) को कामकाज में लाने से पहले उस मोहड़ से ब्याह दिया जाता जो घर मे बने ऊआन के बीचोंबीच स्थित होती। कालांतर घरों का स्टाईल बदला, गृहिणी का भी स्टाईल बदला किन्तु विचार वही रहे पर्यावरणीय तो घर की गृहिणी ने बौंखरी के उपयोग से पहले उसकी शादी आम से रचानी शुरु कर दी। आज भी दिखती हैं यह प्रथा कहीं कहीं जहां कोई नवव्याहता ससुराल की रीत अनुसार और कोई बूढ़ी स्त्री लोक परलोक की सोच अनुसार अक्सर बौंखरी को काम में लाने से पहले उसे लाल दुपट्टा ओढ़ा कर ब्याहणा नहीं भूलती। माधवी लता और आम के पेड़ के विवाह बाबत पढ़ बौंखरी विवाह याद आया। विवाह में एक गीत जो उस वक्त गाया जाता है जब फेरों के बाद वर वधू के आसन बदलाए जाते हैं-

खारे दित्ते बदलाई, धीये हुण होई पराई...
बौंखरीं विवाह का दृश्य.।।

हर साल श्रावण मास में लाखों की तादाद में कांवडिये सुदूर स्थानों से आकर गंगा जल से भरी कांवड़ लेकर पदयात्रा करके अपने गांव वापस लौटते हैं। इस यात्रा को कांवड़ यात्रा बोला जाता है। ऐसे ही बाबा भोले के एक भक्त आशीष उपाध्याय ने 22 जुलाई 2016 को हरिद्वार से जल लेकर बाबा विश्वनाथ वाराणसी में 18 दिनों के पैदल यात्रा के पश्चात् लगभग 1032 किलोमीटर यात्रा संपन्न कर भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक किया। यह आज तक की सबसे लंबी कांवड़ यात्रा में शामिल है। श्रावण की चतुर्दशी के दिन उस गंगा जल से अपने निवास के आसपास शिव मंदिरों में शिव का अभिषेक किया जाता है। यह एक धार्मिक एवं सामाजिक आयोजन है।

कांवड़ के माध्यम से जल की यात्रा का यह पर्व सृष्टि रूपी शिव की आराधना के लिए हैं। पानी आम आदमी के साथ साथ पेड़ पौधों, पशु- पक्षियों, धरती में निवास करने वाले हजारो लाखों तरह के कीड़े-मकौड़ों और समूचे पर्यावरण के लिए बेहद आवश्यक वस्तु है। उत्तर भारत की भौगोलिक स्थिति को देखें तो यहां के मैदानी इलाकों में मानव जीवन नदियों पर ही आश्रित है। धार्मिक आस्थाओं के साथ सामाजिक सरोकारों से रची कांवड यात्रा वास्तव में जल संचय की अहमियत को उजागर करती है। कांवड यात्रा की सार्थकता तभी है जब आप जल बचाकर और नदियों के पानी का उपयोग कर अपने खेत खलिहानों की सिंचाई करें और अपने निवास स्थान पर पशु पक्षियों और पर्यावरण को पानी उपलब्ध कराएं तो प्रकृति की तरह उदार शिव सहज ही प्रसन्न होंगे।◆◆◆

प्राचीन भारतीय शिक्षा की विशेषता

प्राचीन भारतीय सभ्यताओं में वैदिक सभ्यता को सर्वप्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। इस सभ्यता के निर्माता आर्य थे। आर्यों के द्वारा जिस शिक्षा प्रणाली का विकास किया गया, उसके सम्बन्ध में वेदों से पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा मूल रूप से आध्यात्मिक तत्वों पर ही आधारित है। इसके अतिरिक्त और भी अनेक ऐसे पक्ष हैं जो इस शिक्षा प्रणाली को अद्वितीय बनाने में सहायक हुए हैं। डॉ. अन्तसेकर के अनुसार, 'वैदिक युग से लेकर अब तक शिक्षा का प्रकाश के स्रोत से अभिप्राय रहा है और यह जीवन के विविध क्षेत्रों में हमारा मार्ग आलोकित करता है।'

शिक्षा के क्षेत्र में आर्यों ने जिन शैक्षिक उद्देश्यों और आदर्शों को निर्धारित किया है, जिस शिक्षा प्रणाली की खोज की यह हजारों वर्षों के उपरांत भी आज के युग में अपने किसी न किसी रूप में विद्यमान है। आर्यों द्वारा विकसित इस उत्कृष्ट शिक्षा प्रणाली की और भी अनेक विशेषताएँ हैं। इन समस्त विशेषताओं का उल्लेख निम्न प्रकार है।

उपनयन संस्कार : वैदिक कालीन शिक्षा की सर्वप्रथम विशेषता थी- उपनयन संस्कार। यह वैदिक शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार था। वैदिक काल में बालक के विद्याध्ययन का औपचारिक प्रारम्भ इस संस्कार के द्वारा होता था। उपनयन का शाब्दिक अर्थ है पास ले जाना। अत- बालक को शिक्षा के लिए गुरु के पास ले जाना ही उपनयन संस्कार कहलाता था। इस संस्कार के अन्तर्गत बालक सर्वप्रथम गुरु के दर्शन करता था एवं तात्कालिक गुरुजन बालक की योग्यताओं और सद्गुणों को परखते थे।

विद्यारम्भ संस्कार : विद्यारम्भ संस्कार बालक का उपनयन संस्कार हो जाने पर, गुरुकुल में प्रवेश प्राप्त करता था। प्रदेश के उपरान्त जिस दिन बालक की शिक्षा का आरम्भ होता था, उस दिन उसका विद्यारम्भ संस्कार किया जाता था। वैदिक शास्त्रों में इस संस्कार के लिए, 'अक्षर स्वीकर्णय' शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ अक्षर ज्ञान का प्रारम्भ अर्थात् उस दिन उसे अक्षर का ज्ञान कराया जाता था। बालक गुरु के साथ सरस्वती तथा कुल के देवताओं की उपासना के साथ अक्षर ज्ञान का प्रारम्भ करते थे।

समावर्तन संस्कार : शिक्षा पूर्ण कर लेने के उपरान्त बालकों का समावर्तन संस्कार किया जाता था, तदुपरान्त ही वे पुन- अपने घर जाते थे। समावर्तन संस्कार गुरुओं के द्वारा सम्पन्न कराया जाता था।

गुरुकुत पद्धति : जिस प्रकार वर्तमान युग में छात्र विद्यालयों में स्थित छात्रावासों में रहकर शिक्षा प्राप्त करते हैं, इसी प्रकार गुरुकुलों में रहकर ही छात्र अध्ययन किया करते थे। गुरुकुल ग्राम एवं नगर के कोलाहलपूर्ण वातावरण में नहीं होते थे।

व्यावसायिक शिक्षा : वैदिक काल में छात्राओं को भिन्न-भिन्न प्रकार के कौशलों में दक्ष बनाने के साथ ही जीविका का निर्वाह करने के लिए भी तैयार किया जाता था। जीविकोपार्जन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बालकों को व्यावसायिक शिक्षा में कृषि एवं वाणिज्य की शिक्षा, औषधि शास्त्र की शिक्षा, सैनिक शिक्षा आदि का विकास हुआ। उपयोगी हस्त कलाओं में पीतल व मिट्टी की वस्तुएं बनाना, लकड़ी का सामान बनाना, कपड़ा बुनना एवं सोने और चांदी के आभूषण बनाना आदि की शिक्षा दी जाती थी।

कक्षा-नाटकीय विधि : इस काल में कक्षा-नाटकीय विधि भी प्रचलित थी। इस पद्धति में गुरु कक्षा के सबसे योग्य छात्र को नायक बना देता था। यह छात्र निम्न कक्षाओं को पढ़ाते थे। इस पद्धति में छात्रों का सहयोग मिलने के कारण गुरुओं पर अध्यापन के कार्य का भार कम हो जाता था।

विद्यार्थियों के जीवन सम्बन्धी नियमों में कठोरता - वैदिक कालीन शिक्षा में विद्यार्थियों को कठोरता के साथ कुछ नियमों का पालन करना पड़ता था। जैसे सूर्यादय के पूर्व उठना, स्नान एवं नित्य क्रिया से निवृत्त होकर हवन करना आदि।

गुरु-शिष्य सम्बन्ध : वैदिक काल में शिष्य गुरु की तन-मन-धन से सेवा करते थे। शिष्य गुरु के प्रति श्रद्धा तथा विनय रखते थे। इस काल में गुरु को विशेष सम्मानप्रद स्थान प्राप्त था। गुरु की सेवा करना उनका धर्म था। छात्र के कर्तव्य-गुरु की आज्ञा का पालन करना, अध्ययन करना, पशु चराना, भिक्षा मांगना, लकड़ी चुनना, पानी भरना आदि।

गुरु के कर्तव्य : अध्यापन, छात्रों को भोजन, वस्त्र आदि की व्यवस्था करना, चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना आदि। गुरु-शिष्य सम्बन्धों को विकसित करने में गुरुकुल प्रणाली का विशेष योगदान रहा है। गुरु एवं शिष्य एक ही परिसर में रहते थे। गुरु छात्रों की प्रत्येक गतिविधि पर ध्यान रखते थे दोनों में पारस्परिक स्नेह, श्रद्धा के भावों का पूर्ण विकास, इस काल में देखने को मिलता है।

व्यावहारिकता का समावेश : प्राचीन कालीन शिक्षा कोरे सैद्धान्तिक आधारों पर ही अवस्थित नहीं थी अपितु शिक्षा में व्यावहारिक पक्षों का पूर्ण ध्यान रखा गया था। विभिन्न प्रकार की क्रियात्मक शैक्षिक गतिविधियाँ जैसे-गौ पालन, कृषि की शिक्षा के साथ-साथ चिकित्सा आदि की शिक्षा इस तथ्य का स्पष्ट संकेत करती है।

अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा : प्राचीन कालीन शिक्षा की एक अन्य प्रमुख विशेषता थी-शिक्षा का अनिवार्य एवं निःशुल्क होना। प्राचीन काल में शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी और शिक्षा सर्वसुलभ थी, परंतु विद्वानों के अनुसार शिक्षा अनिवार्य थी। ब्राह्मण का कर्तव्य ही शिक्षा प्रदान करना समझा जाता था। छात्र अपनी शिक्षा समाप्ति पर ही गुरु को दक्षिणा के रूप में पशु, अन्न, भूमि आदि देता था।

शिक्षा का उद्देश्य - प्राचीन कालीन शिक्षा का उद्देश्य चरित्र का निर्माण, धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता आदि पर आधारित भावनाओं का विकास करना था।

शिक्षा का स्वरूप - प्राचीन कालीन शिक्षा का स्वरूप धर्म पर आधारित था। शिक्षा का सम्पूर्ण कार्य-कलाप धार्मिक अनुष्ठानों के रूप में सम्पन्न होता था।

ब्रह्मचर्य - प्राचीन काल में प्रत्येक छात्र को जीवन के विशिष्ट भाग में ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था। आचरण की शुद्धता को प्रमुखता दी जाती थी। अविवाहित छात्रों को ही गुरुकुल में प्रवेश मिलता था।

पाठ्यक्रम - प्राचीन कालीन शिक्षा के पाठ्यक्रम में वेदों को प्रमुख स्थान दिया गया था। छात्रों को चारों वेदों का अध्ययन कराया जाता था। इसके अतिरिक्त छन्दशास्त्र, गणित, तर्क, दर्शन, व्याकरण आदि को भी पाठ्यक्रम में समुचित स्थान दिया था। परम्परागत अभिवृत्ति, पाठ्यक्रम का प्रमुख आधार थी। यज्ञ तथा अन्य संस्कार विधियों का प्रयोगात्मक ज्ञान प्रदान किया जाता था।

दण्ड व्यवस्था - प्राचीन काल की शिक्षा में दण्ड की आवश्यकता नहीं होती थी। शारीरिक दण्ड तो निषिद्ध था। आवश्यकताहोने पर गुरु छात्र की शुद्धि के लिए उद्दालक व्रत का पालन करने का दण्ड देते थे।◆◆◆

ओम बिरला बने दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष

एनडीए ने दूसरी बार ओम बिरला को लोकसभा का अध्यक्ष चुन लिया है। पिछली मोदी सरकार में भी ओम बिरला लोकसभा के अध्यक्ष रह चुके हैं। वे अनुशासनप्रिय, और संसद की कार्यवाही के संचालन के लिए प्रतिबद्ध तथा अनुभवी और सभी राजनीतिक दलों के साथ तालमेल बिठाने वाले अध्यक्ष के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं।

जेपी नड्डा बने राज्यसभा के नेता

वर्तमान लोकसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में गठित सरकार में भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को केंद्र सरकार में स्वास्थ्य मंत्री बनाया गया है और उन्हें राज्यसभा में भी एनडीए के नेता के तौर पर नियुक्ति दी गई है, जो कि हिमाचल प्रदेश के लिए एक गौरव का विषय है। हिमाचल के सांसदों ने ली शपथ नई लोकसभा में भाजपा ने हिमाचल प्रदेश में चारों की चार सीटें जीतकर एनडीए सरकार में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराई है। अनुराग ठाकुर, डॉ. राजीव भारद्वाज, कंगना रनौत और सुरेश कश्यप ने लोकसभा के सांसद के रूप में शपथ ग्रहण की है।

बांसुरी स्वराज ने संस्कृत में ली शपथ

भाजपा की तेज तर्रार नेता सुषमा स्वराज की बेटी बांसुरी स्वराज ने लोकसभा के लिए दिल्ली प्रदेश से सांसद का चुनाव जीतने के बाद संसद में संस्कृत भाषा में शपथ ली है। बांसुरी स्वराज सुषमा स्वराज के पदचिन्हों पर चलते हुए हिंदुत्व की प्रखर वक्ता और भाजपा की राष्ट्रीय प्रवक्ता के तौर पर भी उनके विचार प्रखरता से सामने आते हैं।

लोकसभा में सबसे कम उम्र की सांसद शांभवी चौधरी

शाम्भवी चौधरी (जन्म 15 जून 1998) लोक जनशक्ति पार्टी की युवा भारतीय राजनीतिज्ञ हैं और बिहार, भारत में समस्तीपुर (लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र) का प्रतिनिधित्व करने वा 18वीं लोकसभा में सबसे कम उम्र की सांसदों में से एक हैं। शांभवी बिहार सरकार में नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली सरकार में भवन निर्माण विभाग के कैबिनेट मंत्री अशोक चौधरी की बेटी हैं । उन्होंने 2019 में लेडी श्री राम कॉलेज फॉर विमेन से समाजशास्त्र में स्नातक की डिग्री पूरी की और बाद में 2022 में दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से समाजशास्त्र में मास्टर डिग्री हासिल की।

पुस्तक समीक्षा : मैं रामवंशी हूँ

लेखक: श्री मनोज सिंह
प्रकाशक:
प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ: 350
मूल्य: 500 (प्रिंट)

पिछले दशक में प्रसिद्ध डॉक्युमेंट्री **'द सीक्रेट लॉ ऑफ अट्रैक्शन'** की एक पंक्ति 'विचार बनाए जिंदगी' हमेशा मेरे मन में रहती है। हमारे विचार और आचरण हमें दुनिया की नजर में संस्कारी या कुसंस्कारी बनाते हैं। आज की तेजी से बदलती दुनिया में, जहां मोबाइल, वीडियो और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने हमारे विचारों को दूषित कर दिया है, ऐसे में सही विचारों और संस्कारों की महत्ता को समझना अत्यंत आवश्यक है।

'मैं रामवंशी हूँ' एक ऐसी पुस्तक है जिसने मेरे जीवन को एक नई दिशा दी है। इस पुस्तक में मानवीय जीवन के हर पहलु को छुआ गया है और हर समस्या का सुंदर, सरल और प्रमाणिक समाधान दिया गया है। यह पुस्तक भारतीय समाज को सुखी, समृद्ध और प्रसन्न जीवन जीने का सरल उपाय बताती है।

दिल्ली स्थित प्रधानमंत्री संग्रहालय में इस पुस्तक का विमोचन माननीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, स्वामी अवधेशानंद गिरी जी महाराज, और वरिष्ठ पत्रकार श्री राम बहादुर राय जी ने किया था। पुस्तक 7 कांडों में विभाजित है, जिसमें वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस की तरह कथानक और संवाद शैली में जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं का वर्णन किया गया है।

पुस्तक की विशेषता

त्रेतायुग की प्रमाणिक कथा और संस्कारों का विस्तृत ज्ञान मिलेगा। समाज शास्त्र, भूगोल, इतिहास, न्याय, नीति, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, युद्धनीति, वेद, उपनिषद, पुराण, और संस्कार शास्त्र का ज्ञान प्राप्त होगा। माता-पिता को बच्चों का पालन-पोषण कैसे करना चाहिए, इसका विस्तृत विवरण है। मनुष्य जीवन में विवाह का वास्तविक उद्देश्य और महत्व समझाया गया है। रामायण के कांडों का महत्व और विविध रामायणों का सन्दर्भ दिया गया है। राम के आदर्शों पर आधारित आधुनिक जीवन जीने के उपाय सुझाए गए हैं। लेखक मनोज सिंह ने अत्यंत साधना और तपस्या से इस अद्भुत ग्रंथ की रचना की है, जो समाज के प्रत्येक वर्ग को पढनी चाहिए। 'मैं रामवंशी हूँ' पुस्तक राम के मार्ग पर चलने वाले रामवंशी बनने का मार्ग दिखाती है। **जय श्री राम।** **पुस्तक समीक्षक : डॉ. महेन्द्र**

यह पुस्तक बिक्री के लिए एमज़ॉन पर भी उपलब्ध है

औषधीय वृक्ष जामुन

भारत को जम्बू द्वीप के नाम से भी जाना जाता है।

भारत में जामुन की बहुतायत रही है। हमारे देश में इसकी पेड़ों की संख्या लाखों-करोड़ों में है। रामायण और महाभारत आदि ग्रंथों में भी इस संबंध में विशेष उल्लेख है। भगवान राम ने अपने 14 वर्ष के वनवास में मुख्य रूप से जामुन का ही सेवन किया था वहीं श्री कृष्ण के शरीर के रंग को ही जामुनी कहा गया है। जामुन विशुद्ध रूप से भारतीय फल है। जामुन एक मौसमी फल है। खाने में स्वादिष्ट होने के साथ ही इसके कई औषधीय गुण भी हैं। जामुन अम्लीय प्रकृति का फल है पर यह स्वाद में मीठा होता है। जामुन में भरपूर मात्रा में ग्लूकोज और फ्रुक्टोज पाया जाता है। जामुन में लगभग वे सभी जरूरी लवण पाए जाते हैं जिनकी शरीर को आवश्यकता होती है।

- पाचन क्रिया तथा पेट की बिमारियों में जामुन लाभदायक है।
- मधुमेह के रोगियों के लिए जामुन एक रामबाण उपाय है. जामुन के बीज सुखाकर पीस लें। इस पाउडर को खाने से मधुमेह में काफी फायदा होता है।
- मधुमेह के अलावा इसमें कई ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो कैंसर से बचाव में कारगर होते हैं। इसके अलावा पथरी की रोकथाम में भी जामुन खाना फायदेमंद होता है. इसके बीज को बारीक पीसकर पानी या दही के साथ लेना चाहिए।
- अगर किसी को दस्त हो रहे जामुन को सेंधा नमक के साथ खाना फायदेमंद रहता है। खूनी दस्त होने पर भी जामुन के बीज बहुत फायदेमंद साबित होते हैं।
- दांत और मसूड़ों से जुड़ी कई समस्याओं के समाधान में जामुन विशेषतौर पर फायदेमंद होता है. इसके बीज को पीस लीजिए। इससे मंजन करने से दांत और मसूड़े स्वस्थ रहते हैं।
- जामुन मधुमेह के रोगियों के लिए रामबाण है। यह पाचनतंत्र को तंदरुस्त रखता है। साथ ही दांत और मसूड़े के लिए बेहद फायदेमंद है।
- जामुन में कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, कैल्शियम, आयरन और पोटैशियम होता है।आयुर्वेद में जामुन को खाने के बाद खाने की सलाह दी जाती है। जामुन की लकड़ी का भी कोई जबाव नहीं है। 8. अगर जामुन की मोटी लकड़ी का टुकडा पानी की टंकी में रख दे तो टंकी में शैवाल या हरी काई नहीं जमती सो टंकी को लम्बे समय तक साफ़ नहीं करना पड़ता।
- इसके पत्ते में एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं जो कि पानी को हमेशा साफ रखते हैं। कुंए के किनारे अक्सर जामुन के पेड़ लगाए जाते थे।
- नदियों और नहरों के किनारे मिट्टी के क्षरण को रोकने के लिए जामुन का पेड़ काफी उपयोगी है। अभी तक व्यवसायिक तौर पर योजनाबद्ध तरीके से जामुन की खेती बहुत कम देखने को मिलती हैं।
- जामुन की खेती में लाभ की असीमित संभावनाएं हैं।इसका प्रयोग दवाओं को तैयार करने में किया जाता है, साथ ही जामुन से जेली, मुरब्बा जैसी खाद्य सामग्री तैयार की जाती है।

अतः इस औषधीय वृक्ष के संरक्षण और संवर्धन में हम सभी को अपना योगदान देना चाहिए। ◆◆◆

आग्नेय गीत

परिवर्तन का लक्ष्य लेकर
नित-नित कलम उठाता हूँ
इसी को सशक्त करने हेतु
मैं आग्नेय गीत सुनाता हूँ
नहीं कोई है ऐसा बंधन
जो द्रुतगति को रोक सके
मुझको मेरे ध्येय मार्ग से
मंजिल से पहले टोक सके
कुम्हलाया पुष्प नहीं हूँ मैं
विचरण मात्र से गिर जाऊँ
ना ही इतना अशक्त क्षीण हूँ.
कि कृष झोंके से मिट जाऊँ
कदम उठाया दहलीज से
तो पीछे नहीं हटाऊँगा
मैं क्रांति-परिवर्तन से
इक नई राह बनाऊँगा
सिरफिरे उन्मादी हैं जो
मुख्यधारा में आ जाएँ.
देश के दुश्मन गद्दारों की
कुत्सित बातों पर ना जाएँ
थाम के मेरा हाथ चलो तो
इक नई रोशनी लाऊँगा
भारत माँ को गर्वित करने
हद पार कर जाऊँगा
राहें रोड़े पत्थर कंकर
सबको दूर हटाना है
सेवा करके भारत माँ की
सारा कर्ज चुकाना है
मैं प्रबल तेज का अनुगामी
हिमशिखरों से दहक जाऊँगा
अपनी कलम के बल पर ही
इक नई भागीरथी लाऊँगा

डॉ. उमेश प्रताप वत्स

आस्तीन के सांप

आस्तीन के सांप बन न डसा करो
अपने हो तो अपने ही बन रहा करो।
किसी वन के विषधर की तरह
दांतों में विष छुपा न रखा करो
जैसे हो वैसे ही बन रहा करो।
सभ्यता का मोल नहीं मिलेगा
तुम्हें असभ्यता ढोकर कर कभी।
होना है सभ्य तो सभ्यता ओढ़
तुम जरा सा चला करो।
धोना है हृदय में पड़ी कालखि को
तो मन को मंदिर बन रखा करो।
न मिलेगा मुकाम तुम्हें कभी
आस्तीन के सांप बन कर।
वन के मृग की तरह दहाड़ कर अपने
मुकाम की ओर जरा चला करो।

डॉ.राजीव डोगरा जनयानकड़,
जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

सब पैसों का खेल

मन में तेरे मैल भरा, कर ले इसको साफ
कुर्सी पर भी बैठ कर, नहीं होगा इंसाफ।
कैसा समय अब आ गया कैसा हुआ व्यवहार
भूल जाता मां बहन को सुंदर दिखी जो नार।
नर और पशु समान है रिश्तों को जाए जो भूल
संस्कार भी भूल गए अब रहे न कोई उसूल।
दिन रात जो करते थे मन से डट कर काम
फ्री की आदत पड़ गई अब करते हैं आराम।
संस्कार सब भूल गए भूले इज्ज़त मान
भीड़ बहुत हो गई शहर में गांव पड़े वीरान।
बड़े बुजुर्गों माता पिता का रहा न इज्ज़त मान
ऐसी शिक्षा और संस्कार नहीं किसी के काम।
सत्ता के पीछे फिरें करते सब गुणगान
सत्ता के जाने के बाद बनते सब अनजान।
दिल में बेईमानी भरी कपट भरा है मन
काला मन है छुपा हुआ बाहर उजला तन।
कपड़े उजले पहन लिए मन से गई न मैल
रिश्ते नाते सब भूल गया पैसे का है खेल

रवींद्र कुमार शर्मा, घुमारवीं, जिल बिलासपुर हि.प्र

स्वास्थ्य रक्षक तुलसी

देवी तुलसी अवसर सभी हिंदुओं के घरों में लगाई जाती है। धार्मिक दृष्टि से तुलसी का पौधा बहुत महत्त्वपूर्ण है, लेकिन स्वास्थ्य-रक्षा में भी तुलसी का बहुत बड़ा सहारा है। आज के जमाने में जहां फैशन के लिए मनीप्लांट आदि की बेल/पौधे लगाए जाते हैं, वहीं केवल गमलों की सुंदरता बढ़ाने के लिए भी तुलसी का पौधा लगाया।।। जाए, तो कई परेशानियों अपने आप तुलसी के पौधे की सुगंध से ही दूर हो जाएंगी। आयुर्वेद शिरोमणि महर्षि शारंगधर का मत है कि तुलसी के पत्तों का रस एक-से-दो तोला लेकर, उसमे डेढ़े माशे से तीन माशें तक काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर पीने से मलेरिया में आशातीत लाभ होता है। पत्ते चबाने या चाय में उबालकर पीने से छाती में सर्दी नहीं लगती और उतरी हुई सर्दी कफ के द्वारा बाहर निकल जाती है, जिससे छाती का दर्द दूर होता है, अगर कफ बढ़ा हुआ हो, तो तुलसी का रस शहद में देने से लाभ होता है, जिसे भी बुखार के साथ जोड़ों में सूजन तथा दर्द हो, उसे तुलसी की जड़ों का काढ़ा (फाट) बनाकर देने से बुखार उतरता है तथा जोड़ों का दर्द दूर होता है। यदि बुखार कई दिन से लगातार चल रहा हो, तो तुलसी के पत्तों का रस सारे शरीर पर मिलने से बुखार में शांति मिलती है। सांप द्वारा काटे हुए व्यक्ति के लिए तुलसी प्राण-रक्षक का काम करती है। सांप द्वारा काटे हुए आदमी को एक-दो मुट्ठी तुलसी के पत्ते चबाकर खिला दिए जाएं, तो सांप का जहर दूर होगा तथा प्राण बच जाएंगे। पत्ते खिलाने के साथ ही तुलसी की जड़ पीसकर मक्खन मिलाकर सांप के कटे स्थान ऊपर लेप करना चाहिए। शुरू में इस लेप का रंग सफेद होगा, लेकिन जैसे-जैसे जहर को खींचेगा वैसे ही उसका रंग काला पडने लगेगा। लेप का रंग काला पडने लगे, तभी उसे हंटाकर दूसरा लेप लगाना चाहिए। इस लेप को भी तब तक लगा रहने देना चाहिए, जब तक काला न पड़े। इसी तरह लेप बदलते रहना चाहिए, जब तक रंग काला पड़ता रहे। जब रंग बदलना तथा काला होना बंद न हो जाए, तो समझना-चाहिए कि जहर का प्रभाव नष्ट हो गया है। बंगाल के 'प्रबुद्ध भारत' पत्र में अक्तूबर, 1926 के अंक में एक सर्प दंश 'सांप काटे' की घटना प्रकाशित की थी कि एक व्यक्ति को सांप ने काट लिया था, उसको तुरंत तुलसी का रस कप निकाल कर दिया, उसके माथे पर लगाया तथा केले के पेड़ के रेशा से रस निकालकर आधा औंस पिलाया। इसी तरह पांच-दस मिनट के अंतर से यह काम चालू रखा, तो छह घंटे के उपचार के बाद उस रोगी को होश जल्दी आ गया। संभवत- रोगी को होश जल्दी आ जाता, मगर उपचार लगभग आठ घंटे बाद शुरू हुआ। यदि सांप द्वारा काटे व्यक्ति की जीवन आशा समाप्त हो गई हो तथा जीवन के लक्षण भी नाममात्र हों, तो भी सारे शरीर पर तुलसी का रस मलना चाहिए और केले के पेड़ का रस मुंह में टपकाते रहना चाहिए। यह काम लगातार आठ-दस घंटे बिना रुके चलाना चाहिए। विद्वानों के मतानुसार इससे जहर दूर होकर जीवन संचार होता है।◆◆◆

Dr. Hem Raj Sharma
ANO- Rectal Surgeon (Kshar Sutra)
(Piles, Fistula, Fissure, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Chikitsak Guru RAV
National Academy of Ayrveda New Dehli under Ministry of Ayush,Govt of India
Formerly Incharge Medical Officer DAH Una, Govt of Himachal Pradesh
Director
JAGAT HOSPITAL & KSHAR SUTER CENTER
Near Govt College Una HP
Mob.: 94184-88660, 88940-68358, 94593-88323
Email: drhemrajsharma55@gmail.com

जलवायु परिवर्तन

हिमाचल में पिघल रहे ग्लेशियर

प्रदेश सरकार करवाएगी चार ग्लेशियरों का अध्ययन, जुलाई में भेजेगी टीम

जलवायु परिवर्तन के कारण हिमाचल में भी ग्लेशियर पिघल रहे हैं। खतरे को देखते हुए हिमाचल सरकार चार ग्लेशियरों का अध्ययन करने के लिए जुलाई में एक टीम भेजेगी। यह बात आज शिमला में हिमाचल के मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना ने विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर गेयटी थियेटर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम के दौरान कही। मुख्य सचिव ने कहा कि जलवायु परिवर्तन हिमाचल की दहलीज पर पहुंच गया है। ग्लेशियरों के फटने के खतरे को देखते हुए जुलाई में सरकार एक टीम अध्ययन के लिए भेजेगी। उन्होंने कहा कि सिक्किम में ग्लेशियर फटने से भयानक तबाही हुई है। ऐसे ही खतरे को देखते हुए भारत सरकार के साथ मिलकर चार से पांच ग्लेशियरों को चिन्हित किया गया है जिनका अध्ययन किया जाएगा। लोगों की लापरवाही से लग रही आग मुख्य सचिव ने प्रदेश के जंगलों में लग रही आग को लेकर कहा कि आग लोगों की लापरवाही से लग रही है। कई स्थानों पर शरारती तत्व भी आग लगा रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोगों के सहयोग के बिना आग पर काबू पाना संभव नहीं है। मुख्य सचिव ने कहा कि मौसम बेहतर होने से आग की घटनाओं में कमी आएगी।

राज्यपाल ने किया पौधारोपण

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आज राजभवन परिसर शिमला में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने देवदार और चिनार के पौधे रोपित किए। इस अवसर पर राजभवन और राज्य रेडक्रॉस सोसायटी के कर्मचारियों ने भी पौधे रोपे। उन्होंने अधिकारियों को वनों में आग लगने की घटनाओं को रोकने के लिए उचित कदम उठाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि बरसात में पौधरोपण के लिए हर वर्ष उचित प्रबंध और व्यवस्था की जाती है। संबंधित विभागों को अधिक से अधिक पौधरोपण, उनकी जीवंतता एवं देखभाल सुनिश्चित करने के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाने चाहिए।◆◆◆

कुल्लू में एक जंगल ऐसा भी,

जहां नहीं चलती कुल्हाड़ी और दराती

नहीं काटी जाती है जंगल की लकड़ी, देवता करते हैं रखवाली

कुल्लू जिले में लोग सदियों पुरानी देव आज्ञा का आज भी पूरी निष्ठा से पालन करते हैं। धूम्रपान, शराब और जुआ निषेध से दूर रहने के साथ ही जंगल यानी पेड़ पर कुल्हाड़ी चलाना पाप समझते हैं। देवी-देवताओं की मान्यताओं को जहां कुछ बातों को लेकर अंधविश्वास से जोड़ा जाता है, लेकिन एक परिपेक्ष्य ऐसा भी है जहां ये मान्यताएं लोगों के लिए वरदान साबित हो रही हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए आज ये मान्यताएं अहम भूमिक निभा रही हैं, जिले की ग्राम पंचायत रैला के अंतर्गत आने वाले विश्व धरोहर ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क की शरण बिट में देवता रिगू नाग के नाम से जाने वाले रिगुबन में आज भी दराट (दरांती) और कुल्हाड़ी नहीं चलती। यहां तक कि स्थानीय पंचायत के लोगों का भी इस वन में प्रवेश निषेध है। यहां किसी विशेष उत्सव को निराहार नहा धोकर देवता के साथ ही नंगे पांव जाया जाता है। रिगुवन में बहुत बड़े-बड़े पेड़ हैं, जो आज बाकी जंगलों में ढूंढे भी नही मिलते ओर ये इतने घने हैं कि यहां अनेक जीव जंतुओं के रहने के आसार हैं। रिंगवन के हरे-भरे जंगल कुल्हाड़ी न चलने का कारण देव आज्ञा माना जाता है।◆◆◆

हिमाचल के पांच विद्यालयों को ग्रीन स्कूल अवॉर्ड

हिमाचल प्रदेश के पांच स्कूलों को अपने परिसरो में पर्यावरण के बेहतरी के लिए ग्रीन स्कूल पुरस्कारों से नवाजा गया है। इनमें तीन सरकारी स्कूल शामिल हैं। पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करने वाली सेंटर फॉर साइंस एंड एन्वायरमेंट (सीएसई) के ग्रीन स्कूल प्रोग्राम (जीएसपी) के तहत स्कूलों की पर्यावरण व्यवस्था के आधार पर अलग-अलग वर्ग में इन स्कूलों को सम्मानित किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य पर शिमला के गेयटी थियेटर में मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना ने ये पुरस्कार प्रदान किए। पर्यावरण के तय मानकों पर सोलन जिला के तीन स्कूलों ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भटियां (सोलन), राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भोंट (शिमला), राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय डिडवीं (हमीरपुर), पाइनग्रोव स्कूल धर्मपुर (सोलन) और जीएमबी स्कूल नालागढ़ (सोलन) को 2023-24 की मुख्यमंत्री रॉलिंग ट्राफियां प्रदान की गईं।◆◆◆

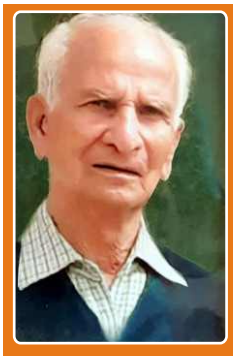

निरंतर राष्ट्र सेवा में तल्लीन रहे अमृत लाल कपूर

अमृत लाल कपूर का जन्म 9 सितंबर 1933 को मंडी नगर के बंगला मुहल्ला में पिता रुल्दू राम और माता पार्वती देवी के घर हुआ। पिता पटवारी रहे, तो माता गृहस्थी का दायित्व निर्वहन करती रही। मंडी के विजय हाई स्कूल से दसवीं की पढ़ाई करने के उपरांत मंडी नगर पालिका में क्लर्क की नौकरी की और साथ में बी.ए. की पढ़ाई भी करते रहे। मंडी के साहित्य सदन से जुड़े रहने के पश्चात जालंधर से एलएलबी की डिग्री प्राप्त कर वर्ष 1960 से मंडी कोर्ट में वकालत शुरू कर वर्ष 2014 तक डटे रहे। वर्ष 1990 से 1992 तक हिमाचल प्रदेश सरकार में अतिरिक्त महाधिवक्ता के पद पर कार्यरत रहे। वर्ष 1969 में पेशे से अध्यापिका जया कपूर के साथ परिणय सूत्र में बंधे। अमृत लाल कपूर भले ही आज इस लोक में न हों, लेकिन उनके द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों की लौ आज भी प्रज्वलित है। वर्ष 1975 में आपातकाल के दौरान राष्ट्र सेवा में लगे स्वयंसेवकों की प्रताडऩा पर चहुंओर से दबाव के वाबजूद अमृत लाल कपूर ने न्यायालय में उन्हें प्रखर राष्ट्रभगत का मरहम लगा कर स्वर्णिम जीत का ध्वज फहरा कर ही दम लिया।

वर्ष 1980 के दशक में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं के मुकदमे भी सफलतापूर्णक लड़े। वर्ष 1977 से 2007 तक जिला संघ चालक का दायित्व निष्ठापूर्वक निर्वहन किया। इस दौरान इन्होंने बहुत से लोगों तक संघ की प्रखर राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत विचारधारा को पहुंचाया और उन्हें राष्ट्र निर्माण के महायज्ञीय कार्य में आहुति डालने के लिए प्रेरित किया। मंडी नगर उस समय गौरान्वित हो गया, जब भारत पाकिस्तान के बंटवारे उपरांत अमृतसर में भारतीय मिलन कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था उन 7 स्वयंसेवकों में से एक अमृत लाल कपूर भी रहे। गौर हो कि इस दौरान वर्ष 1948 से पहले के स्वयंसेवकों को हिंदुओं की रक्षा के लिए इस मिलन कार्यक्रम का दायित्व सौंपा गया था। वर्ष 1975 में जनसंघ को ज्वाइन करने के लिए अमृत लाल कपूर को निमंत्रण मिला, लेकिन इन्होंने राजनीति में जाने की बजाय निस्वार्थ भाव से राष्ट्र निर्माण के कार्य को चुना। इनके त्याग और बलिदान को आज भी मंडी नगर में याद किया जा रहा है। ◆◆◆

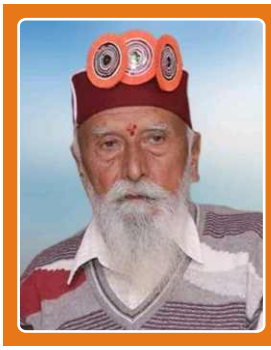

अच्छर सिंह जी ने समाज सेवा व शिक्षा में किए महत्वपूर्ण कार्य

ठाकुर अच्छर सिंह जी का जीवन समाज सेवा और शिक्षा के प्रति समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है। उनका जन्म 1936 में हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में हुआ था। अपने युवावस्था से ही उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़कर समाज सेवा की दिशा में कदम बढ़ाए। उनके नेतृत्व में बिलासपुर विभाग में आरएसएस की गतिविधियाँ बहुत ही प्रभावशाली और संगठित रूप से चलने लगीं। 88 वर्ष की आयु में 18 जून 2024 को ठाकुर अच्छर सिंह जी ने इस संसार से विदा ली। उनका जीवन न केवल संघ के लिए बल्कि समाज के हर वर्ग के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। उन्होंने समाज सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में अनेकों महत्वपूर्ण कार्य किए, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक साबित होंगे।ठाकुर जी ने हिमाचल शिक्षा समिति के संरक्षक के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज के पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा में लाने के लिए अनेकों प्रयास किए। उनके नेतृत्व में अनेकों स्कूल और शिक्षण संस्थान स्थापित किए गए, जो आज भी हजारों छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

समाज सेवा में उनकी रुचि और समर्पण अद्वितीय था। उन्होंने कई सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया और समाज के विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता फैलाने का कार्य किया। ठाकुर अच्छर सिंह जी ने हमेशा समाज के हर वर्ग की भलाई के लिए कार्य किया और अपने जीवनकाल में उन्होंने अनेकों लोगों की मदद की। उनके निधन से न केवल उनका परिवार, बल्कि संपूर्ण समाज एक महान नेता और मार्गदर्शक को खो चुका है। ठाकुर अच्छर सिंह जी की सेवाएं और योगदान सदैव स्मरणीय रहेंगे। उनके द्वारा किए गए कार्यों और उनके आदर्शों को ध्यान में रखते हुए हमें समाज सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में उनके पदचिह्नों पर चलना चाहिए। भगवान उनके आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार और अनुयायियों को इस दुख को सहन करने की शक्ति दें। पुण्य स्मरण पर कोटि कोटि नमन।◆◆◆

विश्व योग दिवस

हिमाचल में हजारों लोगों ने योगाभ्यास से दिया निरोग रहने का संदेश

गण की सेर सोलन में योग भारती द्वारा योगाभ्यास

विश्व योग दिवस के उपलक्ष्य पर हिमाचल प्रदेश के सभी जिलों में बड़ी संख्या में कार्यक्रम हुए। प्रदेश आयुष विभाग की ओर से मुख्य कार्यक्रम का आयोजन शिमला के रिज मैदान पर किया गया। रिज पर राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल सहित करीब एक हजार लोगों ने योगाभ्यास किया। बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम में मौजूद रहे राज्यपाल ने कहा कि भारत की परंपरा में ही योग रहा है। भारत के ऋषियों ने इसे सभी लोगों को दिया लेकिन इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का धन्यावाद करते हैं कि उन्होंने अपने विशेष प्रयास से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योग को करने के लिए एक ऐसी व्यवस्था की मांग की और संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में घोषित किया। इसी का परिणाम है कि आज विश्व के 124 से अधिक देशों में शुरू हुआ योगाभ्यास बढ़ता चला जा रहा है। योग सतत् प्रक्रिया है, उसे सभी लोगों को अपने स्वास्थ्य की दृष्टि से और मानसिक संतुलन को बनाए रखने के लिए करना चाहिए। आयुष विभाग के निदेशक निपुण जिंदल ने कहा कि जिला स्तर पर भी कार्यक्रम आयोजित किए गए, जबकि रिज मैदान पर मुख्य कार्यक्रम हुआ। इसके अलावा विभिन्न संस्थाओं ने अलग-अलग स्थानों पर कई कार्यक्रम आयोजित किए। अटल टनल रोहतांग में योगाभ्यास अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर हल्की बारिश के बीच 10,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित अटल टनल रोहतांग समेत दस जगहों पर योग क्रियाएं की गईं। अटल टनल रोहतांग के नॉर्थ पोर्टल पर तापमान में भारी गिरावट के बावजूद योगाभ्यास हुआ। कुल्लू के ढालपुर में योगाभ्यास। वहीं आयुष विभाग ने जिला स्तरीय योग दिवस का आयोजन रथ मैदान ढालपुर में किया, जबकि अन्य चिह्नित स्थानों पर भी योग क्रियाएं करवाकर लोगों को दिनचर्या में योग और ध्यान को शामिल कर शरीर को निरोग रखने का संदेश दिया। ढालपुर में उपायुक्त कुल्लू तोरूल एस रवीश ने जिला स्तरीय योग दिवस का शुभारंभ किया। इसमें जिला प्रशासन, सामाजिक संगठनों, सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों और एनसीसी और एनएसएस के स्वयं सेवियों ने योगाभ्यास में भाग लिया। उधर, उपायुक्त कुल्लू ने कहा कि साल में एक बार योग न करें, बल्कि योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाए और रोजाना योगाभ्यास करते रहे। इससे शरीर निरोग रहेगा और स्वास्थ्य में किसी तरह की दिक्कत नहीं आएगी। जिला प्रशासन मंडी की ओर से आयुष विभाग के सहयोग से शुक्रवार को सेरी मंच पर 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। उपायुक्त मंडी अपूर्व देवगन ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस दौरान अतिरिक उपायुक्त रोहित राठौर भी उनके साथ कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस दौरान विभिन्न योग क्रियाओं का अभ्यास करवाया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य पर आयुष विभाग ने हमीरपुर के बचत भवन में जिला स्तरीय समारोह एवं योगाभ्यास सत्र आयोजित किया। इस कार्यक्रम में नेहरू युवा केंद्र और अन्य संस्थाओं ने भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। मुख्य अतिथि सहायक आयुक्त पवन कुमार शर्मा ने दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम के दौरान योगाभ्यास सत्र आयोजित किया गया, जिसमें सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने योगासन एवं प्राणायाम किया। जिला शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान गौना करौर में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर योग प्रशिक्षक तिलक राज शर्मा ने डीएलएड प्रशिक्षुओं को योगाभ्यास करवाया। ◆◆◆

शिव प्रताप शुक्ल, राज्यपाल हिमाचल

21 जून 2024 को राष्ट्रीय पुस्तक मेला के अवसर उद्घाटन अवसर पर दिया गया वक्तव्य

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विश्व के विभिन्न देशों में योग दिवस धूमधाम से मनाया जा रहा है। विश्व के अधिकांश देश योग के अध्ययन और साधना के लिए बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। ऐसे में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर हिमाचल प्रदेश सरकार का उपेक्षाभाव और उदासीनता चिंता का विषय है।

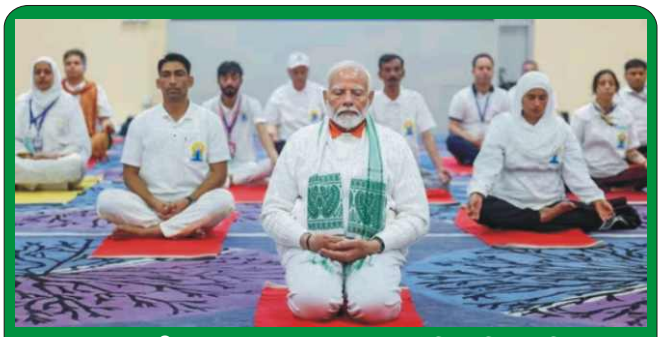
जम्मू कश्मीर में योग साधना का ऐतिहासिक चित्र

हिमाचल में नशे का जाल लील रहा मां के लाल

हिमाचल प्रदेश में पिछले 3 सालों में 58 युवाओं की मौत ड्रग ओवरडोज से हो चुकी है। बीते दो सालों से औसतन 2000 मामले एनडीपीएस के दर्ज हो रहे हैं। कुछ जानकार उड़ता पंजाब के आइने में हिमाचल को भी देख रहे हैं क्योंकि हिमाचल में नशे का जाल फैलता जा रहा है और युवाओं को लील रहा है। इसी साल 7 फरवरी को मेरा 23 साल का जवान बेटा विवेक गांव गया था। जहां नशे के ओवरडोज की वजह से उसकी मौत हो गई। उसे चिट्टे की लत थी, जो आखिरकार उसकी जान लेकर ही छूटी। ये बयां करते वक्त कांता देवी की आंखे भर आती हैं लेकिन उसे अपना नाम जगजाहिर करने और बेटे की गलत लत के बारे में बताने में कोई हिचकिचाहट नहीं है। हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के नाहन की कांता देवी जैसी ना जाने कितनी मांओं के लाल नशे के जाल में फंसकर अपनी जिंदगी के साथ-साथ परिवार को भी तबाह कर रहे हैं।

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले 3 साल में हिमाचल प्रदेश के 58 युवा ड्रग ओवरडोज से अपनी जान गंवा चुके हैं। कांगड़ा से लेकर ऊना और बिलासपुर से लेकर सोलन तक युवाओं की मौत के मामले सामने आ चुके हैं। हिमाचल का शायद ही कोई जिला ऐसा बचा हो जहां नशे की जद में युवा ना हों। मई महीने की 15 तारीख को ही कांगड़ा के ठाकुरद्वारा में 27 साल के युवक की लाश मिली, जिसके पास नशे की सिरिंज पड़ी हुई मिली। परिवार का इकलौता बेटा नशे की भेंट चढ़ गया। पिता ने दर्जी का काम करके बेटे को पाला था लेकिन नशे ने सबकुछ छीन लिया। ऐसी कहानियां हिमाचल में बिखरी पड़ी हैं लेकिन ज्यादातर लोग शर्म के मारे सामने नहीं आते।

स्थिति और ज्यादा भयावह है

सरकारी आंकड़ों में मौत की गिनती हमेशा कम ही होती है। नशे के खिलाफ दशकों से काम कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता जीयानंद शर्मा कहते हैं कि नशे की ओवरडोज से मौत का आंकड़ा और भी ज्यादा हो सकता है। नशे को लेकर हालात बहुत ही डराने वाले हैं। घर से दूर रहकर पढ़ाई या छोटी-मोटी नौकरी करने वाले युवा नशा के सौदागरों के निशाने पर रहते हैं।

प्रदेश के सबसे बड़े शिक्षण संस्थानों में से एक एनआईटी हमीरपुर में साल 2023 में एक छात्र की नशे के ओवरडोज से मौत हो गई। जांच में खुलासा हुआ कि नशा तस्करों की पहुंच हॉस्टल तक थी। ये वाकया सोचने पर मजबूर करता है और सरकार से लेकर पुलिस के तमाम दावों को अंगूठा दिखाता है। नशे के ओवरडोज से मौत की मनहूस ख़बरें मानो आम हो चली है। नशे की खेप और उसके साथ गिरफ्तारी की खबरों से अखबार अटे रहते हैं लेकिन युवाओं के नाम पर सियासत का झंडा बुलंद करने वाले नेताओं की जुबान पर इस मसले को लेकर ताला लटका है।

कांता देवी जैसी मां के लिए सबसे बड़ा दर्द यही है कि उन्हें अब इसके साथ जिंदगी बितानी है। लेकिन ये एक मां का हौसला ही है जो उसे आगे बढ़कर इस नशे के खिलाफ आवाज बुलंद करने की हिम्मत दे रहा है। कांता देवी की सरकार और पुलिस से अपील है कि नशा तस्करों पर कड़ा एक्शन हो, इस जाल को फैलने से रोकें ताकि जो उसके साथ हुआ वो किसी और मां के साथ ना हो। कांता देवी सरकारी नशा मुक्ति केंद्रों की भी पैरवी करती हैं ताकि नशा छुड़ाने की राह में पैसा रोड़ा ना बने।

शिमला के एएसपी रहे सुनील नेगी बताते हैं कि नशे के मामलों में होने वाली काउंसलिंग के दौरान काफी चौंकाने वाली बातें सामने आती हैं। 18 से 20 साल के लडके नशे के इतने आदी हो रहे हैं कि घर से पैसे, सामान और मां के गहने तक चुरा रहे हैं ताकि नशा खरीद सकें। नेगी कहते हैं कि पुलिस सख्ती के साथ नशे पर नकेल कसने में जुटी है लेकिन इसमें समाज से लेकर परिवार और स्कूल जैसे संस्थानों को भी अपनी भागीदारी निभानी होगी।

हिमाचल को करीब से जानने वाले वरिष्ठ पत्रकार नवनीत शर्मा कहते हैं कि पहाड़ की जवानी अगर यूं ही नशे के जाल में फंसती रही तो इसका असर सबको भुगतना पड़ेगा क्योंकि एक युवक का नशा करना या ओवरडोज से मौत होना पूरे परिवार को गर्त में धकेलता है। इसलिये सियासत और सरकारों का रोल तो अहम है ही समाज के सभी वर्गों को भी हाथ बढ़ाना होगा। क्योंकि पहले जहां सिर्फ पंजाब को नशे का गढ़ कहा जाता था अब ये धीरे-धीरे दूसरे राज्यों में भी जड़ें जमा चुका है। ◆◆◆

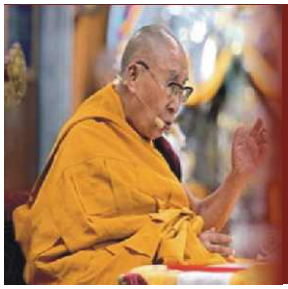

दलाईलामा बोले चीन में भी बढ़ी बौद्ध धर्म के प्रति रुचि

मकलोडगंज में प्रवचन के अंतिम सत्र में धर्मगुरु दलाईलामा ने तिब्बती युवाओं को दी विशेष शिक्षा

तिब्बती बुद्ध विहार मकलोडगंज में आयोजित दो दिवसीय प्रवचन में धर्मगुरु दलाईलामा ने कहा कि तिब्बत के अलावा चीन में भी बौद्ध धर्म के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी है। चीन के लोग भगवान बुद्ध के बारे में पढने और उन्हें समझने की कोशिश कर रहे हैं। धर्मगुरु ने मंगलवार को मुख्य तिब्बती बुद्ध विहार मकलोडगंज में आयोजित दो दिवसीय प्रवचन के अंतिम सत्र में यह बात कही। मुख्य बौद्ध मंदिर त्सुगलगखांग मकलोडगंज में तिब्बती युवाओं के लिए दो दिवसीय शिक्षाओं के दूसरे दिन तिब्बती धर्मगुरु दलाईलामा ने कहा कि हम निर्वासन में हैं, चाहे युवा हों या वृद्ध, हम शिक्षा में रुचि रखते हैं।

उन्होंने कहा कि तिब्बती बौद्ध धर्म के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले चीनी लोगों की संख्या बढ़ रही है। हमें इस बारे में सोचना चाहिए कि हम उनकी मदद कैसे कर सकते हैं। दुनिया के अन्य हिस्सों में भी लोग हैं जहां पहले बौद्ध धर्म के बारे में बहुत कम जाना जाता था, लेकिन अब दुनिया भर के लोग बौद्ध धर्म में रुचि ले रहे हैं। दुनिया के शरणार्थी समुदायों में, तिब्बती हमारी आध्यात्मिक परंपराओं और संस्कृति को जीवित रखने के मामले में सबसे सफल हैं। तिब्बती धर्मगुरु दलाईलामा ने लोकसभा के चुनावों में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को विजेता के रूप में उभरने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बधाई दी है।

तिब्बती धर्मगुरु दलाईलामा ने लोकसभा के चुनावों में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को विजेता के रूप में उभरने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बधाई दी है। नरेन्द्र मोदी को लिखे पत्र में दलाईलामा ने कहा कि भारत को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए देखना मुझे प्रशंसा और गर्व से भर देता है। इन चुनावों ने संकेत दिया है कि भारत के लोग अपने लोकतंत्र को कितना महत्व देते हैं। भारत महान प्राचीन सभ्यताओं में से एक है, जिसकी एक विशिष्ट और मौलिक विशेषता अहिंसा और करुणा रही है और इसे राष्ट्रों के समुदाय में अग्रणी माना जाता है।दलाईलामा कहा कि भारत की हमारी निर्वासित तिब्बती सरकार व तिब्बती समुदाय के लोगों के प्रति निरंतर उदारता और दयालुता के कारण ही हम निर्वासन में शांति और स्वतंत्रता से अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में सक्षम हैं। इसके लिए वह भारत के प्रति अपनी अपार कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।◆◆◆

मतान्तरण रोकने हेतु वंचित एवं वनवासी सन्यासी को बनाया जगद्गुरू

अनुसूचित जाति के महंत को बनाया महामंडलेश्वर

सामाजिक षडयंत्र कर मतान्तरण का खेल खेलने वालों पर नकेल लगाने के लिए संगम नगरी प्रयागराज के जूना अखाड़े ने अनुसूचित जाति के सन्त महामण्डलेश्वर महेन्द्रानन्द गिरी को जगदगुरु की उपाधि प्रदान की गयी है। यह अनुसूचित जाति के पहले जगदगुरु हैं। बता दे अखाड़ों की परम्परा में अनुसूचित जाति के महामण्डलेश्वर बहुत पहले से हैं। परन्तु जगदगुरु बनाने की परम्परा पहली बार आरम्भ हुई है।

अखाड़ों में इस परम्परा के आरम्भ होने से सन्तों में बड़ा उत्साह है। वहीं महन्त महेन्द्रानन्द के अनुसूचित जाति के शिष्य कैलाशानन्द गिरि को महामण्डलेश्वर व राम गिरि को श्रीमहन्त की उपाधि प्रदान की गयी है। जूना अखाड़े के सिद्ध बाबा मौज गिरि आश्रम में मंत्रोच्चार के बीच सभी का अभिषेक हुआ। महेन्द्रानन्द जी और कैलाशानन्द को सिंहासन पर आसीन करके छत्र- चँवर भेंट किया गया। जूना अखाड़े के अन्तरराष्ट्रीय सभापति महन्त प्रेमगिरि ने इस अवसर पर कहा कि जूना अखाड़ा संन्यास परम्परा में जाति, वर्ग का भेदभाव समाप्त करने के लिए व ईसाई मिशनरी द्वारा हिन्दुओं में विभेद पैदा कर मतान्तरण कराने की प्रक्रिया के रोकने के लिये इस परम्परा को और समृद्ध करने की आवश्कयता महसूस कर रहा था। यह उसी दिशा में लिया गया अहम निर्णय है। यह पहल इसलिये भी महत्वपूर्ण हो गयी है क्योंकि हिन्दू धर्म की विरोधी विदेशी ताकतें इस समय तीव्रता के साथ मतान्तरण के प्रयासों में जुटी हुई है और उनके निशाने पर वंचित समाज और आदिवासी ही हैं। जूना अखाड़े ने वंचित और आदिवासी समाज के 52 सन्तों को महामण्डलेश्वर बनाने का निर्णय किया है जो स्वागत योग्य है। यह पहल सामाजिक विघटन रोकने के लिये महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

आगे आये सन्त समाजः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ लगातार समाज में जाति धर्म के विभेद को मिटाने के लिये प्रयासरत है। संघ के सरसंघचालक डॉ। मोहन जी भागवत ने सन्तों, मठों, मन्दिरों के पीठाधीश्वरों से समाज में समानता के लिये जागरूकता फैलाने के लिये आगे आने का आग्रह किया था। 208 में महामण्डलेश्वर बनने वाले वंचित समाज के कन्हैया प्रभुनन्द गिरि का कहना है कि आम आदमी से लेकर सन्त बनने फिर महामण्डलेश्वर बनने तक उनका जीवन बदल गया। जो उन्हें कभी हेय भाव से देखते थे उनकी दृष्टि बदल गयी। कुछ ऐसे ही भाव इसी समाज के कैलाशानन्द गिरि के हैं। जूना अखाड़े ने इन्हें भी महामण्डलेश्वर बनाया है। जूना अखाड़ा अभी तक 52 वंचितों और आदिवासी समाज के सन्यासियों को महामंडलेश्वर बना चुका है।◆◆◆

कोदरे के लड्डुओं के बाद अब छाया मौसमी फलों का अचार

महिला एफ पीओ समूह सकोह सिद्धपुर ने तैयार किया लसूड़ों का अचार, हाथों-हाथ बिकने से महिलाओं की आर्थिकी में भी सुधार

कोदरे के लड्डुओं से देश भर में नाम कमाने वाले 'महिला एफपीओ समूह सकोह-सिद्धपुर' ने अब मौसमी फलों का अचार बनाने में भी पहल की है और आजकल लसुड़ों का आचार बनाकर बिक्री हेतु तैयार किया है। एफ पीओ के अध्यक्ष सतपाल सिंह चौहान सचिव भूपेंद्र सिंह और उत्पादन केंद्र की प्रभारी रजनी सकलानी ने बताया कि अब एफ पीओ में यहां पर बनने वाले सभी प्रकार की खाद्य सामग्री जिसमें लड्डू और अचार इत्यादि प्रमुख है इसे इस ग्रुप की एक सक्रिय सदस्य दिवगंत लीला देवी मेमोरियल एग्रो उत्पादन केंद्र के नाम से रजिस्ट्रेशन कराने के लिए आवेदन कर दिया है जो किसान उत्पादक संघ एफ पीओ द्वारा संचालित किया जायेगा। रजनी सकलानी ने बताया कि उन्होंने पिछले दिनों एलोवेरा की एक किस्म जिसे यहां द्वावारेढे कहा जाता है उसका भी अचार डाला था और उसके बाद लहसुन और अब लसुड़ों का अचार डाला है, जिसे पहाड़ी रत्न ब्रांड नाम से बिक्री किया जा रहा है।

उन्होंने ब्लाक के अन्य क्षेत्रों के महिला समूहों से अपील की है कि यदि उनके गांव में लसुड़ों के पेड़ हों तो वे उन्हें उतार कर एफ पीओ को बिक्री कर सकते हैं और ये उत्पादक समूह उसका भी अचार डालेगा और बिक्री करेगा। उन्होंने बताया कि अब बरसात में वे बांस के मानुओं का भी आचार डालेंगे। उन्होंने कहा कि इसकी बिक्री एफ पीओ के माध्यम से की जायेगी जिसे एफ पीओ के स्थानीय बिक्री केंद्रों टिहरा, संधोल, धर्मपुर, बरोटी, मण्डप, स%जाओपिपलू और सधोट के अलावा सरकाघाट, मंडी और अन्य स्थानों पर उपलब्ध करवा दिया जाएगा। उधर एफ पीओ के अध्यक्ष सत्तपाल सिंह ने बताया कि इस एफपीओ का मकसद स्थानीय सीजनल फलों की प्रोसेसिंग करके महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुधारना और स्थानीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना है। सचिव भूपेंद्र सिंह ने कहा कि वे 10 जून को धर्मपुर खण्ड के 25 महिला समूहों की एक कार्यशाला नाबार्ड के सहयोग से धर्मपुर में आयोजित करने जा रहे हैं, जिन्हें अलग अलग प्रकार के उत्पाद तैयार करने के बारे ट्रेंनिग दी जाएगी और उनकी अलग से फेडेरेशन बनाई जाएगी। जिसके माध्यम से उन्हें कई प्रकार के उत्पाद बनाने की ट्रेनिंग इस साल में दी जाएगी। उन्होंने बताया कि वे बरसात में आम आधारित उत्पादों के बारे में भी जल्दी इन महिला समूहों को ट्रेंनिग देंगे तथा मशरूम उत्पादन केंद्र खौदा के माध्यम से उत्पादन व उसकी बिक्री बारे में भी प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिसकी रूपरेखा 10 जून को तैयार की जाएगी। जिसमें फू ड प्रोसेसिंग विशेषज्ञ डॉक्टर हरदयाल सिंह गुलेरिया भी भाग लेंगे।◆◆◆

सुमित व कुलदीप को सम्मानित करेगा वर्ल्ड बुक आफ रिकार्ड

18 जुलाई को दोनों को ब्रिटेन में इंटरनेशनल एक्सीलेंस अवार्ड से किया जाएगा सम्मानित

विश्वस्तर पर विभिन्न क्षेत्रों से विभूतियों को किया जा रहा है सम्मानित, बेहतर कार्य के लिए मिल रहा पुरस्कार

जागरण संवाददाता, बीबीएन : बद्दी स्थित दवा निर्माता क्योरटेक ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर सुमित सिंगला को दवा निर्माण के क्षेत्र में शानदार उपलब्धियों व सामाजिक सेवा में अग्रिम पंक्तियों में रहने पर वर्ल्ड बुक आफ रिकार्ड यूके की ओर से इंटरनेशनल एक्सीलेंस अवार्ड 2024 ब्रिटेन की संसद में 18 जुलाई को दिया जाएगा। इसके अलावा समारोह में हिमाचल के लोक गायक और नाटी किंग कुलदीप शर्मा को भी सम्मानित किया जाएगा।

वर्ल्ड बुक आफ रिकार्ड यूके, इंडियन प्रेजिडेंट व सीईओ संतोष शुक्ल ने बताया कि समारोह में ब्रिटिश सांसदों के अतिरिक्त यूके व विश्वभर के व्यक्ति व बुद्धिजीवी हिस्सा लेंगे। समारोह के दौरान सुमित सिंगला, उनकी पत्नी रेशु सिंगला जो आइवीएन हर्बल्स की चेयरपर्सन एंड मैनेजिंग डायरेक्टर हैं भी उपस्थित होंगी। समारोह के दौरान विश्वभर की विश्व धरोहरों, साइट्स को चिह्नित किया जाता है और उनका चयन करके उनका नाम ब्रिटिश जर्नल व मैगजीन में प्रकाशित किया जाता है। नाटी किंग कुलदीप शर्मा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय अवार्ड मिलना उनके लिए एक सपने से कम नहीं और इसके लिए उन्होंने उद्योगपति सुमित सिंगला का आभार जताया।

सुमित सिंगला व कुलदीप शर्मा • जागरण

सुमित सिंगला ने बताया कि उनके बड़े भाई स्व. अमित सिंगला की ओर से लगाया गया वृक्ष आज दो दशकों से अधिक समय से मल्टी नेशनल कंपनियों के लिए गुणवत्ता दवाओं के निर्माण में अग्रसर है और ग्रुप में 1000 से अधिक लोगों को रोजगार मिल रहा है।

भारत विकास परिषद की बद्दी इकाई ने आग पीड़ितों को बांटा राशन

प्रथम न्यूज । नालागढ़, (गुरजीत सिंह)- भारत विकास परिषद ने आग से बेघर हुए प्रवासी कामगारों की मदद के लिए हाथ बढ़ाए है। परिषद के पदाधिकारियों ने इन कामगारों को खाने के लिए राशन मुहैया कराया है। नायब तहसीलदार बद्दी की देखरेख में यह कार्य हुआ। परिषद के अध्यक्ष रमन कौशल व महासचिव देवव्रत यादव ने बताया कि परिषद की ओर से प्रवासी कामगार मुकेश, टीटू, अमन, शशि, हरिओम, दिशान, साकिद, राज कुमार, ओमबीर, बृजवाल, रमेश, पप्पू, पिट्टू, असरफी, रोदास, रमन सिंह, बहादुर, अनुज, धर्मपाल, प्रमोद, नेजत्र पाल, मुकेश कुमार, सूरज, राजेश, विक्की, मेघनाथ, वीरपाल, जोगिंद्र, नरेश, घुंघर पाल, विजय, भूरा, आश मोहम्मद, सोमवीर, हरवीर, इकबाल, बुदिया, हरदेश, शिवरत्न, बोबी, रैना राम व दुकानदार चैनाराम को राशन दिया। रमन कौशल ने बताया कि सोमवार शाम के समय टोल बैरियर के समीप अचानक आग लग गई। बताया गया कि झुगियों के ऊपर जा रही बिजली की तारों से चिंगारी उठी और सबसे पहले चैना राम की दुकान में आग लगी और उसके बाद यह आग पूरी झुग्गियों में फैल गई। जिससे 42 झुगियां जल गई। इस नेक काम को करने के लिए राम गोपाल अग्रवाल, देवव्रत यादव, द्वारिका नाथ सूद, भीम सिंह, अनुपम,एमएम ग्रोवर, दीप कुमार आर्य, नीरज गुप्ता, रमन कौशल, महेश कौशल, डॉ.हेमंत कौशल, मोहन लाल मुन्नी प्रीत पाल, पवन गुप्ता, सुषमा ठाकुर व सीडी मिश्रा ने सहयोग किया। इस मौके पर प्रांत सेवा प्रमुख दीप कुमार आर्य भी उपस्थित रहे।

50 साल बाद भी हरे हैं इमरजेंसी के घाव

इंदिरा गांधी सरकार की सलाह पर तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने संविधान के अनुच्छेद 352 के तहत आपातकाल की घोषणा की। आपातकाल लागू करने का कारण था राजनीतिक अस्थिरता। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने 12 जून 1975 को इंदिरा गांधी को चुनावी धांधली का दोषी पाया और उन्हें छह साल के लिए किसी भी चुने हुए पद पर आसीन होने से वंचित कर दिया। इस फैसले के बाद, देश भर में विरोध प्रदर्शन और राजनीतिक तनाव बढ़ गया। इंदिरा गांधी और उनकी सरकार ने दावा किया कि देश में गहरी अशांति और आंतरिक अस्थिरता है, जिसके चलते राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा है। इसी कारण से उन्होंने आपातकाल की घोषणा की, जिससे वे बिना किसी विधायी और न्यायिक हस्तक्षेप के सरकार चला सकें।

आपातकाल का वो काला दौर था, जब सरकार ने तमाम विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार किया, प्रेस पर सेंसरशिप लगाई और नागरिक स्वतंत्रता को सीमित किया। आरएसएस समेत 24 संगठनों पर बैन लगा दिया गया। इसके अलावा, इंदिरा गांधी की सरकार ने देश में व्यापक सामाजिक और आर्थिक सुधारों की शुरुआत की, जिसमें जबरन नसबंदी और स्लम क्लीयरेंस जैसे कठोर उपाय शामिल थे। देश में आपातकाल के खिलाफ विपक्ष एकजुट होना शुरू हो गया। विपक्ष के कई बड़े नेता जेल में थे। वहीं कुछ नेताओं ने बाहर इंदिरा सरकार के खिलाफ रणनीति बनाना शुरू कर दी। विपक्ष के नेताओं ने राष्ट्रपति भवन पर धरना दिया था और देशव्यापी सभाएं और प्रदर्शन किए। इंदिरा गांधी ने आपातकाल हटाने के बाद 1977 में चुनाव कराए थे, ताकि वो 'लोकतंत्र समर्थक' दिख सकें लेकिन इंदिरा की सारी कोशिशें नाकाम रह गईं और 1977 में नवगठित जनता पार्टी ने 'वन इज टू वन' के तहत एकजुट होकर कांग्रेस को परास्त किया , जिससे इंदिरा गांधी हाशिये पर चली गई थीं। रायबरेली से खुद इंदिरा गांधी चुनाव हार गईं। मोरारजी देसाई देश के पीएम बने। आजादी के 30 साल बाद ये पहली गैर कांग्रेसी सरकार थी।◆◆◆

आपातकाल

पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संसद में वक्तव्य

जो लोग इस देश के संविधान की गरिमा से समर्पित हैं, जो लोग भारत की लोकतांत्रिक परंपराओं पर निष्ठा रखते हैं, उनके लिए 25 जून न भूलने वाला दिवस है। 25 जून को भारत के लोकतंत्र पर जो काला धब्बा लगा था, उसके 50 वर्ष हो रहे हैं। भारत की नई पीढ़ी ये कभी नहीं भूलेगी की संविधान को पूरी तरह नकार दिया गया था, भारत को जेलखाना बना दिया गया था, लोकतंत्र को पूरी तरह दबोच दिया गया था। इमरजेंसी के ये 50 साल इस संकल्प के हैं कि हम गौरव के साथ हमारे संविधान की रक्षा करते हुए, भारत के लोकतांत्रिक परंपराओं की रक्षा करते हुए देशवासी ये संकल्प करेंगे कि भारत में फिर कभी कोई ऐसी हिम्मत नहीं करेगा, जो 50 साल पहले की गई थी और लोकतंत्र पर काला धब्बा लगा दिया गया था। अगर हमारे देश के नागरिकों ने लगातार तीसरी बार किसी सरकार पर भरोसा किया है, तो इसका मतलब है कि उन्होंने सरकार की नीतियों और नीयत पर मुहर लगाई है। मैं आप सभी के समर्थन और भरोसे के लिए आभारी हूं। सरकार चलाने के लिए बहुमत ज़रूरी है, लेकिन देश चलाने के लिए आम सहमति ज़रूरी है।◆◆◆

पूंजीवाद के संबंध में डॉ हेडगेवार

प्रह्लाद सबनानी

पूंजीवादी सिद्धांत के जनक कहे जाने वाले एडम स्मिथ का कहना था कि अर्थव्यवस्था में अधिक से अधिक धनकुबेर पैदा होने चाहिए, इससे अंतत: वह देश विकसित देश की श्रेणी में शामिल हो सकता है। अत: देश में धनकुबेर पैदा करने में शासन द्वारा आर्थिक नीतियों को उद्योगपतियों के हित में बनाया जाना चाहिए।

पूंजीवादी सिद्धांत पर आधारित आर्थिक नीतियों को अमेरिका में बहुत उत्साहपूर्वक लागू किया गया था। 1950 के दशक के बाद अमेरिका में इन सिद्धांतों के अनुपालन के पश्चात अमेरिकी अर्थव्यवस्था में विकास दर बहुत तेजी से आगे बढ़ी और शीघ्र ही अमेरिका विकसित देशों की श्रेणी में शामिल हो गया था। विश्व में साम्राज्यवाद का सिद्धांत सबसे पुराना माना जाता है। शक्ति एवं प्रभुत्व बढ़ाकर जिन राज्यों पर सत्ता स्थापित की जाती है उन राज्यों के नागरिकों को दोयम दर्जे का नागरिक बना लिया जाता है और उनका शोषण किया जाता है। इस शासन प्रणाली में भी गरीब और अधिक गरीब हो जाते हैं और रा%य करने वाले देश के नागरिक शोषित राज्यों के संसाधनों का अति शोषण करते हुए इन्हें अपने हित में उपयोग करते हैं और वे स्वयं अमीर से और अधिक अमीर बनते चले जाते हैं। चूंकि पूंजीवादी सिद्धांतों के अनुपालन में कुछ देश तेजी से विकास कर रहे थे एवं कुछ अन्य देशों का अति शोषण हो रहा था और पूंजीवाद एक तरह से विश्व के कई देशों में फैल रहा था।

अत: पूंजीवाद एवं साम्राज्यवाद के प्रभाव को रोकने के लिए डॉ केशव बलिराम हेडगेवार ने वर्ष 1920 में नागपुर में आहूत किए जाने वाले कांग्रेस के अधिवेशन में प्रस्ताव समिति के सामने एक प्रस्ताव रखने का प्रयास किया था। इस प्रस्ताव में दो विषयों का उल्लेख किया गया था। एक, कांग्रेस को यह वादा करना चाहिए कि वह अंग्रेजों से भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के नीचे कुछ भी स्वीकार नहीं करेगी और दूसरे, पूरे विश्व को पूंजीवादी नीतियों से मुक्ति दिलायी जाएगी। परंतु उस समय के कांग्रेस के नेताओं द्वारा डॉक्टर हेडगेवार के उक्त प्रस्ताव को कांग्रेस अधिवेशन में प्रस्तुत नहीं किया गया।

इस प्रकार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय प्रथम संघचालक डॉक्टर हेडगेवार ने वर्ष 1920 के पूर्व ही पूंजीवाद से उत्पन्न होने वाले खतरों को पहचान लिया था तथा वे पूंजीवाद की आड़ में विश्व में फैल रहे साम्रा%यवादी नीतियों के भी घोर विरोधी थे। साम्राज्यवादी नीतियों के अंतर्गत ब्रिटेन ने भी भारत पर ईस्ट इंडिया कम्पनी के माध्यम से ही आधिपत्य स्थापित किया था। शुरुआती दौर में तो ब्रिटेन की ईस्ट इंडिया कम्पनी भी भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से ही आई थी। बाद में भारत को गुलाम बनकर भारत के संसाधनों का ब्रिटेन के हित में उपयोग किया गया। उक्त कारणों के चलते ही परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार ने विश्व के देशों को पूंजीवाद की जकड़ से बाहर निकालने का प्रयास वर्ष 1920 में किया था। साम्राज्यवादी नीतियों को लागू कर विकसित देशों ने गरीब देशों पर न केवल अपना शासन स्थापित किया था बल्कि इन गरीब देशों को जमकर लूटा भी गया था।◆◆◆

विश्व की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है रामचरितमानस

प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह

हिमालय साहित्य संस्कृति मंच, शिमला एवं ओजस सेंटर फॉर आर्ट एण्ड रीडरशिप डेवल्पमेंट (ओकार्ड) इण्डिया, दिल्ली द्वारा शिमला के ऐतिहासिक गेयटी हाल में 'कवि दरबार' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह प्रख्यात साहित्यकार व शिक्षाविद के सानिध्य में हुआ, उन्होनें इस अवसर पर कहा कि दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है गोस्वामी तुलसीदास विरचित रामचरितमानस, तुलसीदास संसार के महान कवि हैं। तुलसीदास की कालजयी कृति रामचरितमानस को अनपढ़ व्यक्ति भी समझ जाता है, और पढ़ा लिखा समझ नहीं पता, यह उसकी विलक्षणता है।

प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह ने उपस्थित कवियों को सबक देते हुए कहा कि कविता और गज़ल की व्याख्या करना ऐसा ही है जैसे फूल की पंखुड़ियां नोंच कर मालूम करना कि उसमें से खुशबू कहां से आ रही है, उन्होंने कहा कि कविता की कोई निश्चित परिभाषा नही हो सकती है। कालिदास का मेघदूत भी सुंदर गज़ल है। भारत की ज्ञान परंपरा में ऋग्वेद का महत्व निर्विवाद है। दुनिया के सभी धर्म ग्रंथों में ऋग्वेद कवितामय है इससे बड़ी महान कविता विश्व के किसी धर्म ग्रंथ में नहीं है।◆◆◆

हिमाचल की बेटी राधिका को संयुक्त राष्ट्र संघ ने दिया सैन्य सम्मान

हिमाचल प्रदेश की बेटी मेजर राधिका सेन ने हिमाचल प्रदेश सहित देश का नाम रोशन किया है। मेजर राधिका सेन को संयुक्त राष्ट्र के सबसे बड़े सैन्य सम्मान से सम्मानित किया गया है। उन्हें 'यूनाइटेड नेशंस मिलिट्री जेंडर एडवोकेट ऑफ़ द ईयर' अवार्ड से नवाज़ा गया है। कांगो में संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षक दिवस के उपलक्ष्य पर संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने राधिका को सम्मानित किया। मेजर राधिका सेन मार्च 2023 से अप्रैल 2024 तक कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के पूर्व में तैनात थी। वह भारतीय त्वरित तैनाती बटालियन की टीम कमांडर थी, जिसमें उन्होंने 20 महिला और 10 पुरुष सैनिकों की टीम को लीड किया था। मेजर राधिका का काम कांगो के लोगों से बातचीत करना, संघर्ष जोन में महिलाओं और बच्चों की आवाज को बुलंद करना और विस्थापितों की समस्याओं को सुलझाना था। राधिका की अगुवाई में टीम द्वारा लैंगिक समानता, रोजग़ार, बच्चों की देखभाल, शिक्षा और महिलाओं की स्वास्थ्य जैसे विषयों पर शैक्षणिक सत्र आयोजित किए गए।◆◆◆

हिमाचल के अर्चित गुलेरिया को

इंग्लैंड में मिला सालाना दो करोड़ रुपये का पैकेज

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के सुलह विधानसभा क्षेत्र की पंचायत सांबा के हल्दरा गांव के अर्चित गुलेरिया को सालाना दो करोड़ रुपये का पैकेज मिला है। अर्चित बतौर इंजीनियर फेसबुक कंपनी में सेवाएं देंगे। उन्हें फेसबुक कंपनी ने जुलाई में इंग्लैंड स्थित कार्यालय में ज्वाइन करने के लिए कहा है। अर्चित मौजूदा समय में अमेजन कंपनी में बतौर इंजीनियर ग्रुरुग्राम में सेवाएं दे रहे हैं। उन्हें सालाना 65 लाख रुपये मिल रहे हैं। अर्चित गुलेरिया अभी 27 वर्ष के हैं। अर्चित के पिता अनिल गुलेरिया भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हुए हैं। माता रंजना गुलेरिया गृहिणी हैं। वह बीते छह वर्षों से बतौर इंजीनियर काम कर रहे हैं। अर्चित गुलेरिया ने जमा दो कक्षा तक की पढ़ाई माउंट कार्मल कान्वेंट स्कूल ठाकुरद्वारा तहसील पालमपुर से 2014 में पूरी की थी। उन्होंने 2018 में कंप्यूटर साइंस में इंजीनियरिंग के साथ अपनी बीटेक की डिग्री पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज चंडीगढ़ से पूरी की। अर्चित युवाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत हैं।◆◆◆

सरकाघाट के वंशज आजाद बने सुप्रीम कोर्ट के ज्यूडिशियल रिसर्च एसोसिएट

हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट के अधिवक्ता वंशज आजाद का चयन सुप्रीम कोर्ट में बतौर ज्यूडिशियल रिसर्च एसोसिएट के पद पर हुआ है। वंशज ने अपनी 12वीं तक की पढ़ाई धर्मशाला से पूरी करने के बाद नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी शिमला से वकालत का पांच वर्षीय कोर्स किया है। इसके बाद एक साल तक हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट में वकालत की।

इस दौरान वंशज आजाद ने सीपीएस सहित बार काउंसिल ऑफ हिमाचल प्रदेश के खिलाफ अति महत्वपूर्ण मुकदमों में पैरवी की। वंशज आजाद ने मार्च में सुप्रीम कोर्ट का टेस्ट पास करके जून में फाइनल साक्षात्कार पास किया है। अब वह आठ जुलाई को ज्यूडिशियल रिसर्च एसोसिएट का पदभार संभालेंगे। वंशज ने अपनी सफलता का श्रेय अपने स्वर्गीय दादा-दादी के अलावा अपने माता-पिता और बहन डॉ. पारिका को दिया।◆◆◆

मैथिली ठाकुर का 'कूंजू चंचलो' सोशल मीडिया पर सुपरहिट

हाल ही में मैथिली ठाकुर ने हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक अत्यंत प्रसिद्ध लोकगीत 'कूंजू चंचलो' गाकर हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक लोक संगीत का सम्मान बढ़ाया है। पारंपरिक लय ताल में मैथिली ठाकुर ने अपनी संगीत की महिला कलाकारों के साथ सामूहिक रूप से इस गीत को प्रस्तुत करके जो संगीत की मिठास और खुशबू बिखेरी है,वह अद्भुत है। हिमाचल प्रदेश के लोक गायकों को भी इस प्रस्तुति से बहुत कुछ सीखने के लिए है खासकर जो उछल कूद करके हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत को बिगाडऩे में लगे हुए हैं। कूंजू चंचलो लोकगीत मैथिली ठाकुर की आवाज में सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। हो भी क्यों नहीं! एक हिमाचल प्रदेश के चंबा का मधुर संगीत और प्रसिद्ध एवं सदाबहार कूंजू चंचलो का गीत और उसको गाने वाली प्रख्यात युवा कलाकार मैथिली ठाकुर।◆◆◆

संचितो अर्थो अपि नश्यति

राजा भोज धर्मशास्त्रों के अनुसार जीवन बिताने का प्रयास करते थे। वे इतने बड़े दानी थे कि कोई भी उनके घर से कभी खाली हाथ नहीं लौटता था। राज्य का दीवान राजा की इस प्रवृत्ति से चिंता में पड़ गया। उसे लगा कि यदि राजा इसी प्रकार दान देते रहे तो एक दिन राज्य का खजाना खाली हो जाएगा। शिवानी एक दिन राजा भोज के भोजन कक्ष की दीवार पर सूक्ति ''आपदर्थे धनं रक्षेत्'' अर्थात् आपातकाल के लिए धन को संभाल कर रखना चाहिए-लिख दी। राजा भोजन करने आए तो दीवार पर लिखी सूक्ति पढ़कर समझ गए की दीवानी सीख देने के लिए इसे लिखा है।

उन्होंने उसके नीचे लिख दिया ''श्रीमतां कुत आपदा!'' अर्थात् सक्षम लोगों पर आपदा कहां आती है। अगले दिन दीवाने राजा की लिखी सूक्ति पढ़ी। उन्होंने नीचे लिख दिया ''दैवात क्वचित समायाति'' अर्थात यदि दैव योग से विपत्ति आ जाए तो...।

राजा ने जब यह सूक्ति पढ़ी तो उन्होंने उसके बीच लिखा, ''संचितों अपि विनश्यति'' अर्थात् ऐसा भी समय आता है, जब संचित संपत्ति नष्ट हो जाती है। राजा ने दीवान से मिलने पर कहा, ''तुम्हारी राज्य के हित में चिंता अपनी जगह ठीक है किंतु मैं धर्म शास्त्रों के अध्ययन से इस निर्णय पर पहुंचा हूं की लक्ष्मी का चंचल कहा गया है इसलिए भविष्य की चिंता छोड़कर इसके साथ कर्मों में निरंतर प्रयोग करना चाहिए◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

के.आर. भारती

1 भाखड़ा डैम का उद्घाटन कब हुआ था?
(क) 20 नवम्बर 1962 (ख) 20 नवम्बर 1963
(ग) 20 नवम्बर 1964 (घ) 20 नवम्बर 1965

2 बैरा सियूल पन बिजली परियोजना कहां स्थित है?
(क) चुराह (ख) भरमौर (ग) पांगी (घ) सलूनी

3 डल्हौजी नगर के नामकरण की सिफारिश किसने की थी?
(क) लार्ड डल्हौजी (ख) लार्ड मैकॉले
(ग) सर डोनाल्ड मैक्लयोड (घ) इनमें से कोई नहीं

4 कांगड़ा के किस राजा ने सुजानपुर टीहरा की स्थापना की थी?
(क) राजा आलम चंद (ख) राजा हमीर चंद
(ग) राजा अभय चंद (घ) राजा घमंड चंद

5 निम्न में से किसे भारत की पैराग्लाइडिंग कैपिटल जाना जाता है?
(क) बीड़-बिलिंग (ख) इंदू नाग (ग) मनाली (घ) मैक्लयोड गंज

6 हरिपुर-गुलेर व्यास की किस उपनदी के किनारे स्थित है?
(क) बनेर (ख) बानगंगा (ग) चक्की (घ) न्यूगल

7 शिमला के सराहन क्षेत्र का पुराना नाम क्या था?
(क) रामपुर (ख) ब्रह्मपुर (ग) शोणीतपुर (घ) इनमें से कोई नहीं

8 कुल्लू के मलाणा क्षेत्र के लोग कौन सी भाषा बोलते हैं?
(क) संस्कृत (ख) पाली (ग) डोगरी (घ) कनाशी

9 हिमाचल का पूर्ण राजत्व दिवस कब मनाया जाता है?
(क) 25 जनवरी (ख) 15 अप्रैल (ग) 1 नवम्बर (ग) इनमें कोई नहीं

10 2011 की जनगणना अनुसार किस जिले का लिंगानुपात (सेक्श रेशो) सबसे अधिक है? (क) कांगड़ा (ख) हमीरपुर (ग) बिलासपुर (घ) मंडी

उत्तर : प्रश्न 1 (ख- 20 नवम्बर 1963) प्रश्न 2 (क- चुराह) प्रश्न 3 (ग-सर डोनाल्ड मैक्लयोड) प्रश्न 4 (घ- राजा घमंड चंद) प्रश्न 5 (क- बीड़-बिलिंग) प्रश्न 6(ख- बाणगंगा) प्रश्न 7 (ग-शोणीतपुर) प्रश्न 8(घ-कनाशी) प्रश्न 9 (क-25 जनवरी) प्रश्न 10 (ख- हमीरपुर)

चुटकुले

टीचर : इस मुहावरे को वाक्य में इस्तेमाल करके बताओ- 'मुंह में पानी आना'
पप्पू : जैसे ही मैंने नल की टोंटी से मुंह लगाकर नल चालू किया- मेरे मुंह में पानी आ गया
टीचर : गेट आउट

◆◆◆

मास्टर जी : अगर पृथ्वी के अंदर लावा है तो बाहर क्या है? पप्पू : मास्टर जी बाहर ओप्पो और वीवो है - घोर सन्नाटा

◆◆◆

टप्पू : तू स्कूल क्यों नहीं जाता,
पप्पू : कई बार गया अंकल वो वापिस भगा देते है, टप्पू : क्यों ?
पप्पू- कहते है भाग तेरा क्या काम लड़कियों के स्कूल में

◆◆◆

टीचर : कल होमवर्क नहीं किया तो मुर्गा बनाऊंगा।
स्टूडेंट : सर मुर्गा तो मैं नहीं खाता, मटर पनीर बना लेना।

◆◆◆

टीचर : तुम परिंदो के बारे में सब जानते हो?
पप्पू : हां, टीचर : अच्छा ये बताओ कौन सा परिंदा उड़ नहीं सकता?
पप्पू : मरा हुआ परिंदा, भाग पागल कहीं का

कार्यालय
मातृवन्दना (मासिक)
डा. हेडगेवार भवन, प्रथम तल नाभा हाउस,
शिमला-171004, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990

सेवा में

____

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रेस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on :